रिसाला नं.118

Shaitan Ke Baa'z Hathiyar (Hindi)

शैत़ान के बा'ज़ हथियार

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुजु़र्गी वाले। (المُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(शैत़ान के बा 'ज़ हथियार)

येह रिसाला **(शैत़ान के बा 'ज़ हथियार)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

शैत़ान के बा'ज़ हथियार

(एक मा'लूमाती मक्तूब)

शैत़ान अपने ख़िलाफ़ लिखा हुवा येह रिसाला (52 सफ़ह़ात) पढ़ने से लाख रोके मगर आप मुकम्मल पढ़ कर इस के वार को नाकाम बना दीजिये ।

100 ह़ाजतें पूरी होंगी

सुल्त़ाने दो[2] जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर **जुमुआ़** के दिन और रात **100** मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह तआ़ला** उस की **100 ह़ाजतें** पूरी फ़रमाएगा, **70** आख़िरत की और **30** दुन्या की और **अल्लाह तआ़ला** एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो उस **दुरूदे पाक** को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किये जाते हैं, बिला शुबा मेरा इल्म मेरे विसाल के बा'द वैसा ही होगा जैसा मेरी ह़यात में है । **(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث۲۲۳۰۵)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एक दुख्यारे इस्लामी भाई की मेइल, मक़ामात, इस्लामी भाइयों और ख़ुद मेइल भेजने वाले इस्लामी भाई का नाम ह़ज़्फ़ कर के चन्द अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मअ़ **ब**

तग़य्युर चन्द म-दनी फूल ह़ाज़िर हैं । पहले तसर्रुफ़ शुदा मेइल पढ़ लीजिये ।

मुझे दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में तक़रीबन 21 साल हो गए हैं, इन 21 सालों में म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से दी गई मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियों को निभाने का मौक़अ़ मिलता रहा है, इस वक़्त बैरूने मुल्क एक काबीना के ख़ादिम की ह़ैसिय्यत से म-दनी काम करने की सआ़दत ह़ासिल है । इन 21 सालों में बहुत नशेबो फ़राज़ देखे लेकिन म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत रही । **''किसी दौर में ग़रीब इस्लामी भाई का बहुत ख़याल किया जाता था, अगर उस के साथ कोई मस्अला हो जाता तो उस की दिलजूई की जाती थी लेकिन अब दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादारान की शफ़्क़तें ''सिर्फ़ अमीर लोगों'' के लिये हैं !''** इस बात का एह़सास उस वक़्त हुवा जब तीन[3] माह पहले पाकिस्तान जाना हुवा, एक ग़रीब इस्लामी भाई (दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार) की **वालिदा फ़ौत** हो गई थी लिहाज़ा उस के घर फ़ातिह़ा ख़्वानी के लिये ह़ाज़िरी हुई । दौराने गुफ़्त-गू उस ने बताया कि एक रुक्ने शूरा हमारे शह्र तशरीफ़ लाए लेकिन मेरे घर फ़ातिह़ा ख़्वानी के लिये नहीं आए । एक रुक्ने शूरा ने र-मज़ान का पूरा माह यहां गुज़ारा लेकिन वोह भी फ़ातिह़ा ख़्वानी के लिये न आए । एक और ग़रीब इस्लामी भाई की **वालिदा का इन्तिक़ाल** हुवा, उन्हों ने भी इसी त़रह़ के ख़यालात का इज़्हार किया । उस वक़्त मैं ने सुन ली और समझा कि शायद येह इस्लामी भाई दुरुस्त नहीं फ़रमा रहे लेकिन इस बात का एह़सास मुझे उस वक़्त हुवा जब 9 मुह़र्रम 1434 हिजरी मुत़ाबिक़

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

यकुम दिसम्बर 2012 ई. बरोज़ हफ़्ता मेरी **वालिदा का इन्तिक़ाल** हुवा, एमरजन्सी में पाकिस्तान जाना पड़ा। एक हफ़्ता रुका इस के बा'द वापसी हुई। 187 मुल्कों में म-दनी काम करने वाली दा'वते इस्लामी में से सिर्फ़ पांच इस्लामी भाइयों ने फ़ोन कर के ता'ज़ियत की। एक रुक्ने शूरा के मक्तब की त़रफ़ से 41 क़ुरआने पाक के ईसाले सवाब की तरकीब की गई। एक और रुक्ने शूरा ने फ़ोन किया मगर सिर्फ़ तसल्ली दी, ईसाले सवाब कुछ नहीं। फ़ातिहा ख़्वानी के लिये एक और ज़िम्मेदार तशरीफ़ लाए उन्हों ने ईसाले सवाब भेजने का कहा लेकिन मैं उन के ईसाले सवाब का इन्तिज़ार ही करता रहा, उन को और निगराने शह्र को हफ़्ता के दिन ख़त्मे पाक की दा'वत भी दी लेकिन..... **क्यूं कि ग़रीब आदमी हूं।**

दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से ईसाले सवाब..... 46 क़ुरआने पाक, इन्फ़िरादी कोशिश से..... 313 क़ुरआने पाक तक़रीबन, इस के इलावा दुरूदे पाक लाखों की ता'दाद में, कलिमए पाक लाखों की ता'दाद में, सूरए यासीन शरीफ़, सूरए मुल्क, सूरए रह़मान और बहुत कुछ..... बहुत से इस्लामी भाई जो दाढ़ी वाले नहीं उन्हों ने भी लाखों की ता'दाद में दुरूदे पाक ईसाले सवाब किया।

इस के बर अ़क्स..... (मक़ाम का नाम ह़ज़्फ़ किया है) एक अमीर आदमी की ज़ौजा बीमार थी उस की तीमार दारी के लिये अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ से फ़ोन करवाया गया और उस को म-दनी ख़बरों में भी दिखाया गया, येह मेरी वालिदा (की वफ़ात) से शायद तीन[3] दिन बा'द का वाक़िआ़ है।

पिछले साल..... (मक़ाम का नाम ह़ज़्फ़ किया है) एक अमीर इस्लामी भाई का बेटा फ़ौत हो गया, रुक्ने शूरा ने अपना जद्वल मन्सूख़ किया और उस के जनाज़े में शिर्कत की तरकीब की । अमीरे अहले सुन्नत और निगराने शूरा से फ़ोन भी करवाए गए, उन के ख़त्म शरीफ़ पर रुक्ने शूरा ने बयान भी किया । बैरूने मुल्क मैं एक ग़ैर मुस्लिम के पास काम करता हूं उस ने तीन[3] दफ़्आ़ फ़ोन किया और ता'ज़ियत की । मेरे पास जो लोग ता'ज़ियत के लिये आए उन में काउन्सिलर जनरल ऑफ़ पाकिस्तान और उस का अ़मला, एक सियासी जमाअ़त का मक़ामी सद्र, प्रेस और वहां के मक़ामी उ़-लमा और बहुत से चाहने वाले ।

काश ! इस मुश्किल वक़्त में मेरी तह़रीक के इस्लामी भाई मुझे ह़ौसला देते और अपने रिश्तेदारों और अहले मह़ल्ला के सामने मेरा भी भरम रह जाता, बहर ह़ाल येह एह़सास हुवा कि **"अगर मैं अमीर होता तो ऐसा न होता ।"**

दुन्या ते जो काम न आवे ऊखे सूखे वेले
इस बे फ़ैज़ संघी कोलूं बेहतर यार अकेले

وَالسَّلام

सगे मदीना का एह़सास..... कहीं मुझ से कोई नाराज़ न हो जाए.....

इस्लामी भाइयों की ख़िदमतों में तरग़ीबन अ़र्ज़ है कि मेइल पढ़ कर सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को माज़ी में मुख़्तलिफ़ जनाज़ों में नीज़ ता'ज़ियतों और इ़यादतों के लिये जाना याद आ रहा है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه शायद ही कोई दा'वते इस्लामी वाला ऐसा होगा जिस ने मुझ से ज़ियादा इ़यादतें की, जनाज़े पढ़े और तदफ़ीन में ह़िस्सा लिया हो, मुझे डर लगता था कि कहीं मय्यितों की ता'ज़ियतों

और मरीज़ों की इ़यादतों के लिये घरों और अस्पतालों में जाने के तअ़ल्लुक़ से मेरी सुस्तियों और कोताहियों के सबब कहीं कोई मुझ से नाराज़ हो कर सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से दूर न जा पड़े ! मेरे ख़याल में अगर किसी के ''सुख'' में ह़िस्सा न भी लिया जाए तो आदमी इतना नाराज़ नहीं होता जितना ''दुख'' या'नी बीमारी, परेशानी या वफ़ात के मुआ़-मलात में हमदर्दी न करने वाले से नाराज़ होता है ! इस ज़िम्न में म-दनी माह़ोल ही की एक ह़िकायत पेश करता हूं, चुनान्चे

..... तो मैं दा'वते इस्लामी वालों से दूर हो गया

एक ग़रीब इस्लामी भाई का क़िस्सा ज़ियादा पुराना नहीं, उन्हों ने (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) जो कुछ बताया वोह अपने अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करता हूं : ''मैं बरसों से म-दनी माह़ोल से वाबस्ता था, अपनी बिसात़ भर दा'वते इस्लामी का कुछ न कुछ म-दनी काम भी कर लिया करता था । मैं बीमार हुवा, मरज़ ने तूल पकड़ा ह़त्ता कि साह़िबे फ़िराश हो गया और छ माह तक बिस्तरे अ़लालत पर पड़ा रहा, सद करोड़ अफ़्सोस ! बीमारी के उस मुकम्मल दौरानिये में हमारे शह़र के किसी ''मीठे मीठे इस्लामी भाई'' का मुझ दुख्यारे के ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ ला कर इ़यादत करना तो कुजा, किसी ने फ़ोन भी न किया, बल्कि यक़ीन मानिये दिलजूई के लिये S.M.S. करने तक की किसी ने ज़ह़मत गवारा न फ़रमाई । बिना बरीं दा'वते इस्लामी वालों से **एक दम मेरा दिल टूट गया और मैं उन से दूर हो गया,** हां एक नेकदिल बन्दा जो अ़-मलन दा'वते इस्लामी में नहीं है उस ने मुझ पर कमाल द-रजा शफ़्क़त का मुज़ा-हरा किया, ह़त्ता कि वोह मुझे डॉक्टरों के पास भी ले जाता रहा, मेरे दिल में उस की **मह़ब्बत** रासिख़ हो गई और मैं उस के क़रीब तर हो गया ।''

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढा उस ने जफा की । (عبدالرزاق)

अल्लाह तआ़ला जन्नत के दो जोड़े पहनाएगा

मा'लूम हुवा किसी दुख्यारे इस्लामी भाई की दिलजूई न करने से उस के म-दनी माह़ोल से दूर जा पड़ने का अन्देशा होता है अगर्चे दूर नहीं होना चाहिये कि येह अपने ही पाउं पर कुल्हाड़ा मारने के मु-तरादिफ़ है मगर शैत़ान वस्वसे डाल कर उस की आख़िरत तबाह करने की कोशिश तेज़ तर कर देता है लिहाज़ा इस त़रह़ कई दूर हो जाते हैं, फिर ऐसे में जो कोई उन पर हाथ रख दे उसी के हो जाते होंगे और क्या बईद इस त़रह़ कई बे अ़मल तो कुछ बद अ़क़ीदा भी बन जाते हों ! बहर ह़ाल मुसीबत ज़दा की ता'ज़ियत में ह़िक्मत ही ह़िक्मत है और येह सवाबे आख़िरत का काम है । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो किसी **ग़मज़दा** शख़्स से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूह़ों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी **मुसीबत ज़दा** से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती । (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج٦ ص ٤٢٩ حديث ٩٢٩٢)

ता'ज़ियत किसे कहते हैं ?

ता'ज़ियत का मा'ना है : मुसीबत ज़दा आदमी को सब्र की तल्क़ीन करना । "ता'ज़ियत मस्नून (या'नी सुन्नत) है ।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 852)

रूठा हुवा मन गया

बसा अवक़ात ग़म ख़्वारी और ता'ज़ियत के दुन्या में भी स-मरात देखे जाते हैं, चुनान्चे येह उन दिनों की बात है जिन दिनों नूर

मस्जिद काग़ज़ी बाज़ार बाबुल मदीना कराची में मेरी इमामत थी, एक इस्लामी भाई पहले मेरे क़रीब थे फिर कुछ दूर दूर रहने लगे थे, मगर मुझे अन्दाज़ा न था। एक दिन फ़ज्र के बा'द मुझे उन के वालिद साहिब की वफ़ात की ख़बर मिली, मैं फ़ौरन उन के घर पहुंचा, अभी ग़ुस्ले मय्यित भी न हुवा था, दुआ़ फ़ातिह़ा की और लौट आया, नमाज़े जनाज़ा में शरीक हो कर क़ब्रिस्तान साथ गया और तदफ़ीन में भी पेश पेश रहा। इस के फ़वाइद तसव्वुर से भी बढ़ कर हुए, चुनान्चे उस इस्लामी भाई ने ख़ुद ही इन्किशाफ़ किया कि मुझे आप के बारे में किसी ने वर-ग़लाया था, उस की बातों में आ कर मैं आप से दूर हो गया और इतना दूर कि आप को आता देख कर छुप जाता था लेकिन मेरे प्यारे वालिद साहिब की वफ़ात पर आप के हमदर्दाना अन्दाज़ ने मेरा दिल बदल दिया, जिस आदमी ने मुझे आप से बददिल किया था वोह मेरे वालिदे मर्ह़ूम के जनाज़े तक में नहीं आया। इस वाक़िए़ को ता दमे तह़रीर कोई 35 साल का अ़र्सा गुज़र चुका होगा, वोह इस्लामी भाई आज भी बहुत **महब्बत** करते हैं, निहायत बा असर हैं, तन्ज़ीमी त़ौर पर काम भी आते हैं, दाढ़ी सजाई हुई है, ख़ुद मेरे पीरभाई हैं मगर उन के बाल बच्चे नीज़ दीगर भाई और ख़ानदान के मज़ीद अफ़राद अ़त्त़ारी हैं, छोटे भाई का म-दनी हुल्या है और दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार हैं बड़े भाई भी बा इ़मामा हैं।

दा'वते इस्लामी में भारी अक्सरिय्यत ग़रीबों की है

अगर्चे किसी साहिबे सरवत या ह़ामिले मन्सबो मन्ज़िलत शख़्सिय्यत की इ़यादत या उस के साथ ता'ज़ियत करना कोई ख़िलाफ़े

शरीअ़त अ़मल नहीं, अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सुन्नत के मुत़ाबिक़ उन की इ़यादत व ता'ज़ियत भी यक़ीनन बाइ़से सवाबे आख़िरत है। मगर येह न हो कि सिर्फ़ मालदारों, अफ़्सरों और दुन्यवी शख़्सिय्यतों की ग़म ख़्वारियां होती रहें और बेचारे ग़रीब इन्तिज़ार ही करते रहें। सच पूछो तो दा'वते इस्लामी पहले ग़रीबों और नादारों की है बा'द में मालदारों की, दा'वते इस्लामी के म-दनी काम दुन्या भर में फैलाने वालों में गु-रबा ही सफ़े अव्वल में हैं। वक़्फ़े मदीना हो कर दा'वते इस्लामी के लिये अपनी जवानियां लुटाने वाले कौन हैं ? मुसल्सल 12 माह और 25 माह सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बनने वाले कौन हैं ? दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम चलने वाली सदहा मसाजिद के इमाम व **मुअज़्ज़िन** कौन हैं ? जामिआ़तुल मदीना और मदारिसुल मदीना के हज़ारों मुदर्रिसीन और मुख़्तलिफ़ अहम ज़िम्मेदारियों पर फ़ाइज़ निगरान कौन हैं ? यक़ीन मानिये ! ग़ालिब नहीं बल्कि अग़्लब ता'दाद इन में मालदारों की नहीं, ग़रीबों या मु-तवस्सितुल ह़ाल इस्लामी भाइयों की है। مَاشَآءَاللّٰه येह आ़शिक़ाने रसूल सुन्नतों की पाबन्दियों के साथ साथ म-दनी कामों की भी ख़ूब ख़ूब धूमें मचाते हैं, पूरे **र-मज़ानुल मुबारक** का ए'तिकाफ़ हो या हफ़्तावार इज्तिमाआ़त या म-दनी क़ाफ़िलों का सफ़र इन में भारी अक्सरिय्यत इन ही "फ़ु-क़राए मदीना" की होती है।

बेशक मालदारों का भी दीन में ह़िस्सा है

मैं येह नहीं कहता कि मालदार और बड़ी शख़्सिय्यात का दीन के कामों में कोई ह़िस्सा ही नहीं, बेशक इन का भी ज़रूर ह़िस्सा है مَاشَآءَاللّٰه इन में से भी हमारे पास मुबल्लिग़ीन व ज़िम्मेदारान हैं मगर

निस्बतन इन की ता'दाद निहायत कम है। सरमाया दारों और दुन्यवी शख़्सय्यात में वक़्त की क़ुरबानी देने वाले अक़ल्ले क़लील होते हैं, इन ह़ज़रात की अक्सरिय्यत सिर्फ़ ज़कात व अ़तिय्यात देने पर इक्तिफ़ा करती है। बेशक अहले सरवत में भी नेकी की दा'वत की धूमें मचाई जाएं, مَاشَآءَاللّٰه येह ह़ज़रात मस्जिदें और मद्रसे बनवाते हैं और इन मा'नों में इन से भी दीने इस्लाम की रौनक़ें हैं। इन पर भी इन्फ़िरादी कोशिशें जारी रखी जाएं ताकि इन में नमाज़ियों की ता'दाद में इज़ाफ़ा हो और येह भी सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनें। मगर इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं कि ग़रीब इस्लामी भाई भुला दिये जाएं और बेचारे आप की जानिब से होने वाली इन्फ़िरादी कोशिश और इस के ज़रीए़ मिलने वाली नेकी की दा'वत, इ़यादत व ता'ज़ियत और ईसाले सवाब की मजलिस में आप की शिर्कत के लिये तरसते रहें और आप उन अहले सरवत के यहां मय्यित हो जाने की सूरत में उन के घरों पर उड़ उड़ कर पहुंचते हों, उन से इन्तिहाई ख़ाशिआ़ना बल्कि ख़ुशा-मदाना लहजे में बातचीत करते हों, उन की ख़ुशनूदी पाने के लिये उन के फ़ौत शु-दगान के लिये ईसाले सवाब का अम्बार लगाते हों, दा'वते इस्लामी के अहम ज़िम्मेदारान से उन की ता'ज़ियत के लिये फ़ोन करवाते हों, फिर कारकर्दगी भी वुसूल करते हों कि आया फ़ुलां "पार्टी" या शख़्सय्यत को आप ने फ़ोन किया या नहीं ? उम्मीद करता हूं मेरी येह बातें अहले सरवत की भी समझ में आती होंगी ! येह ह़ज़रात भी ग़ौर फ़रमाएं कि अगर इन की कोठी के चोकीदार का वालिद फ़ौत हो जाए तो इन का त़र्ज़े अ़मल क्या होता है और वाक़िफ़ कारों में

से किसी सियासी या समाजी लीडर या सरमाया दार के वालिद का इन्तिक़ाल हो जाए तो फिर क्या अन्दाज़ होता है ! दुन्यवी शख़्सिय्यत के जनाज़े में और ग़रीब आदमी अगर्चे नेक नमाज़ी हो उस के जनाज़े में अ़वामी ह़ाज़िरी का फ़र्क़ कौन नहीं जानता ! बहर ह़ाल ! ऐसा नहीं होना चाहिये, मालदारों को भी चाहिये कि अपने मुलाज़िमों और चोकीदारों वग़ैरा के साथ ख़ूब ख़ूब ग़म ख़्वारी भरा बरताव फ़रमाएं ।

ग़ुरबत के फ़ज़ाइल

ग़रीब व अमीर दोनों ही **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं : (1) मैं ने जन्नत में मुला-ह़ज़ा फ़रमाया तो अहले जन्नत में फ़ु-क़रा को ज़ियादा देखा । (مُسنَدِ اِمام احمد بن حنبل ج٢ ص٥٨٢ حدیث٦٦٢٢) (2) फ़ु-क़रा, मालदारों से 500 बरस पहले जन्नत में जाएंगे । (تِرمذی ج٤ ص١٥٧ حدیث ٢٣٥٨) (3) जो शख़्स अच्छी त़रह़ नमाज़ पढ़ता हो, उस के अ़याल (या'नी घर वाले) ज़ियादा और माल कम हो और वोह शख़्स मुसल्मानों की ग़ीबत न करता हो मैं और वोह जन्नत में इन दो (उंग्लियों) की त़रह़ होंगे । (या'नी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अंगुश्ते शहादत और बीच की उंगली मिला कर दिखाया) (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج ٧ ص ١٤٩ حدیث ٢١٨٣٥)

''इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त'' बराए ईसाले सवाब

दा'वते इस्लामी के तमाम ज़िम्मेदारों की ख़िदमतों में म-दनी इल्तिजा है कि आप के यहां किसी इस्लामी भाई को मरज़ या मुसीबत (म-सलन बच्चा बीमार होना, नोकरी छूटना, चोरी या डकैती होना, स्कूटर या मोबाइल फ़ोन छिन जाना, ह़ादिसा पेश आना, कारोबार में नुक़्सान हो जाना, इमारत गिर जाना, आग लग जाना, किसी

की वफ़ात हो जाना वगै़रा कोई सा भी सदमा) पहुंचे, सवाब की निय्यत से उस दुख्यारे की दिलजूई कर के सवाबे अ़ज़ीम के ह़क़दार बनिये कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **है :** ''बेशक **अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में फ़राइज़ के बा'द सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल येह है कि मुसल्मान को **ख़ुश** करे।'' (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر ج۱۱ص۵۹حدیث۱۱۰۷۹) इन्तिक़ाल हो जाने पर हो सके तो फ़ौरन मय्यित के घर वगै़रा पर ह़ाज़िरी दीजिये, मुम्किना सूरत में ग़ुस्ले मय्यित, नमाज़े जनाज़ा बल्कि तदफ़ीन में भी ह़िस्सा लीजिये। मालदारों और दुन्यवी नामदारों की दिलजूई करने वालों की उ़मूमन अच्छी ख़ासी ता'दाद होती है, मगर बेचारे ग़रीबों का पुरसाने ह़ाल कौन ? बेशक अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ आप अहले सरवत की ता'ज़ियत फ़रमाइये मगर ग़रीबों को भी नज़र अन्दाज़ मत कीजिये, इन ''शख़्सिय्यात'' के साथ साथ बिल ख़ुसूस आप के जिस मा तह़्त ग़रीब इस्लामी भाई के यहां मय्यित हो जाए, उसे रिश्तेदारों वगै़रा को जम्अ़ करने की तरग़ीब दिला कर उस के मकान पर ज़ियादा से ज़ियादा 92 मिनट का **''इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त''** रखिये, अगर सब तक आवाज़ पहुंचती हो तो फिर बिला ह़ाजत ''साउन्ड सिस्टम'' लगाने के मुआ़-मले में ख़ुदा से डरिये, ह़स्बे हैसिय्यत **लंगरे रसाइल** का ज़रूर ज़ेह्न दीजिये, मगर त़आ़म का एहतिमाम हरगिज़ न होने दीजिये, (**मस्अला :** तीजे का खाना अग़्निया के लिये जाइज़ नहीं सिर्फ़ ग़ु-रबा व मसाकीन खाएं, तीन दिन के बा'द भी मय्यित के खाने से अग़्निया (या'नी जो फ़क़ीर न हों उन) को बचना चाहिये।) जो वक़्त तै़ हो जाए उस की पाबन्दी कीजिये, ''बा'द नमाज़े इशा होगा'' कहने के बजाए घड़ी के मुत़ाबिक़ वक़्त तै़ कीजिये

म-सलन रात 9 बजे का त़ै हुवा है तो लोगों का इन्तिज़ार किये बिग़ैर ठीक वक़्त पर तिलावत से आग़ाज़ कर दीजिये, फिर ना'त शरीफ़ (दौरानिया 25 मिनट), सुन्नतों भरा बयान (दौरानिया 40 मिनट) और आख़िर में **ज़िक्रुल्लाह** (दौरानिया 5 मिनट), रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ (दौरानिया 12 मिनट) और सलातो सलाम (तीन अश्आ़र) मअ़ इख़्तामी दुआ़ (दौरानिया 3 मिनट) । अ़लाक़े के तमाम ज़िम्मेदारान, मुबल्लिग़ीन, मुम्किना सूरत में मर्कज़ी मजलिसे शूरा के अराकीन और दीगर इस्लामी भाइयों की शिर्कत यक़ीनी बनाइये और कोशिश कर के ईसाले सवाब के लिये वहां से हाथों हाथ **म-दनी क़ाफ़िले** सफ़र करवाइये ।

सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से की गई जवाबी मेइल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से **मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी मेरे मीठे मीठे म-दनी बेटे..... अ़त्तारी** سَلَّمَهُ الْبَارِی की ख़िदमत में,

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال

आंखें रो रो के सुजाने वाले

जाने वाले नहीं आने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

निगराने शूरा अबू ह़ामिद इमरान अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِی ने मुझे आप की मेइल फ़ॉरवर्ड की, जिस में आप की अम्मीजान की वफ़ाते ह़सरत आयात का तज़्किरा था, सब्रो हिम्मत और ह़ौसले से काम लीजिये और

सब घर वालों को भी येही तल्क़ीन फ़रमाइये । **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** मर्हूमा को ग़रीक़े रह़मत करे, बे ह़िसाब बख़्शे, आप को और तमाम लवाह़िक़ीन को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मर्ह़मत फ़रमाए । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

आह ! मुझ गुनहगारों के सरदार के पास नेकियां कहां ! गुनाहों का अम्बार है, काश ! गुनाहों का बख़्शने वाला रब्बे ग़फ़्फ़ार جَلَّ جَلَالُهٗ मुझ पापी व बदकार को मुआ़फ़ी की भीक से नवाज़ कर महूज़ अपनी रह़मत से मेरी ख़त़ाओं के पुलन्दे पर अ़त़ाओं की बारिशें फ़रमा दे और मेरे गुनाह नेकियों से बदल दे । ज़हे नसीब ! ऐसा ही हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के भरोसे मैं अपने पास मौजूद तमाम नेकियों का रह़मते इलाही के मुत़ाबिक़ मिलने वाला सवाब बारगाहे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में नज़्र कर के आप की वालिदए मर्हूमा को ईसाल करता हूं ।

तह़रीर बा'ज़ अवक़ात अपने मुह़र्रिर के मिज़ाज की अ़क्कास होती है

उ़मूमन आदमी को अपनी ता'रीफ़ अच्छी ही लगती है और ग़-लत़ी बताने वाला एक आंख नहीं भाता ऐसों ही की तरजुमानी करते हुए किसी ने कहा है :

नासिह़ा मत कर नसीह़त दिल मेरा घबराए है
उस को दुश्मन जानता हूं जो मुझे समझाए है

दुआ़ गो हूं कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ब तुफ़ैले ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत करे और नसीह़त क़बूल करने वाला क़ल्ब इनायत फ़रमाए । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मीठे मीठे म-दनी बेटे ! आप की मेइल में मुझ पर **''शैत़ान के बा'ज़ हथियारों का इन्किशाफ़''** हुवा है । ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ हमें शैत़ान के हर वार से मह़फ़ूज़ फ़रमाए । आमीन । बराए मेह़रबानी सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह इर्शादे गिरामी : ''मुझे वोह शख़्स मह़बूब (या'नी प्यारा) है जो मेरे उ़यूब से मुझे आगाह करे ।'' (الطبقات الکبری لابن سعد ج۳ص۲۲۲) पेशे नज़र रखते हुए मेरे म-दनी फूलों पर ठन्डे दिल से ग़ौर फ़रमाते चले जाइये । देखिये ! मुझ से नाराज़ न हो जाना, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के इस अनमोल क़ौल का वासित़ा जिस में इर्शाद फ़रमाया गया है : ''इन्साफ़ पसन्द तो उस के मम्नून (या'नी शुक्र गुज़ार) होते हैं जो उन्हें सवाब (या'नी दुरुस्ती) की राह बताए ।'' (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (चार ह़िस्से), स. 220, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची) हज़ार बार पाउं पकड़ कर और लाखों मा'ज़िरतों के साथ अ़र्ज़ है : तह़रीर बसा अवक़ात अपने मुह़र्रिर (या'नी लिखने वाले) की क़ल्बी कैफ़िय्यात की अ़क्कास होती है, मेइल पढ़ कर इस्लाह़ की ज़रूरत मह़सूस हुई लिहाज़ा कुछ म-दनी फूल ह़ाज़िरे ख़िदमत करता हूं अगर मेरे येह मह़सूसात ग़लत़ हों तो दस्त बस्ता मुआ़फ़ी की ख़ैरात का ख़्वास्त-गार हूं ।

ख़ुद को ''अहम शख़्सिय्यत'' समझना भूल है

जब इन्सान अपने आप को ''अहम'' न समझे तो उसे किसी के ''न पूछने'' का ग़म भी नहीं पहुंचता । मेरे भोलेभाले म-दनी बेटे ! जिन को पूछा नहीं जाता बसा अवक़ात उन की भी अपनी शानें हुवा करती हैं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (جامع صغیر)

काश कि हम भी ऐसे होते जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تعالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **गुमनाम** बन्दों के लिये ख़ुश ख़बरी है ! वोह बन्दे जो ख़ुद तो लोगों को जानते हैं लेकिन लोग उन्हें नहीं पहचानते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने (जन्नत पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते ह़ज़रते सय्यिदुना) रिज़्वान عَلَیْہِ السَّلَام को इन की पहचान करा दी है, येही लोग हिदायत के रोशन चराग़ हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम तारीक फ़ितने इन पर ज़ाहिर फ़रमा दिये हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें अपनी रह़मत (से जन्नत) में दाख़िल फ़रमाएगा। येह **शोहरत** चाहते हैं न **ज़ुल्म** करते हैं और न ही रियाकारी में पड़ते हैं।"

("अल्लाह वालों की बातें", जि. 1, स. 162, **حِلْیَۃُ الْاَولیاء** ج۱ ص۱۱۸)

दीन की ख़िदमत के सबब इ़ज़्ज़त की त़लब

मेरे मीठे मीठे म-दनी बेटे ! किसी शख़्स का अपने लिये येह ज़ेहन बना लेना कि मैं ने चूंकि दीन की ख़िदमत की (या अह़कामे शरीअ़त के ऐन मुत़ाबिक़ दा'वते इस्लामी का म-दनी काम किया है) इस लिये मुझे फ़ुलां फ़ुलां मुराआ़त मिलनी ही चाहिएं, मेरी ह़ैसिय्यत तस्लीम की जाए, मेरी ह़ौसला अफ़्ज़ाई होनी चाहिये (ह़ालां कि येह एक त़रह़ से अपनी ता'रीफ़ का मुत़ा-लबा है कि ह़ौसला अफ़्ज़ाई उ़मूमन ता'रीफ़ कर के होती है) मेरी दिलजूई भी होती रहे, मुझ पर मुसीबत आए तो मुझे ब शुमूल शख़्सिय्यात कसीर अफ़राद दिलासा दें (कि मैं ने दीन के बड़े बड़े काम जो किये हैं !) याद रखिये ! दीन की ख़िदमत आ'ला द-रजे की इ़बादत है और इ़बादत पर दुन्या वालों से इ़वज़ व बदला त़लब करने की इजाज़त नहीं, जिसे अपनी

दीनी ख़िदमात का एह़सास हो और इस बिना पर उस का नफ़्स वाह वाह और इ़ज़्ज़त वग़ैरा की त़लब मह़सूस करे उसे "रियाकारी की ता'रीफ़" पर नज़र कर लेनी चाहिये, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"नेकी की दा'वत" सफ़ह़ा** 66 पर है : **रिया** की ता'रीफ़ येह है : **"अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के इ़लावा किसी और इरादे से इ़बादत करना ।"** गोया इ़बादत से येह ग़रज़ हो कि लोग इस की इ़बादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग इस की **ता'रीफ़** करें या इसे नेक आदमी समझें या इसे **इ़ज़्ज़त** वग़ैरा दें ।

(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْکبائِر ج۱ص۸۶)

रियाकारी का दर्दनाक अ़ज़ाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है **:** "बेशक **जहन्नम** में एक वादी है जिस से जहन्नम रोज़ाना चार सो मर्तबा **पनाह** मांगता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह वादी उम्मते मुह़म्मदिय्यह عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के उन **रियाकारों** के लिये तय्यार की है जो कुरआने पाक के **ह़ाफ़िज़**, **ग़ैरुल्लाह** के लिये **स-दक़ा** करने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के **ह़ाजी** और **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **में निकलने** वाले होंगे ।" (اَلْمُعْجَمُ الْکبِیرج۱۲ص۱۳۶حدیث ۱۲۸۰۳)

बचा ले रिया से बचा या इलाही
तू इख़्लास कर दे अ़त़ा या इलाही

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 166 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "रियाकारी" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (طبرانی)

ख़ुद पसन्दी की तबाह कारियां

ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़

मीठे मीठे म-दनी बेटे ! बसा अवक़ात आदमी नेक काम तो करता है मगर उस पर शैत़ान का हथियार कारगर हो चुका होता है और वोह इसे अपना ज़ाती कारनामा समझ बैठता है उसे येह एह़सास नहीं रहता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई तौफ़ीक़ ही से मैं येह कर रहा हूं। सभी के लिये ज़रूरी है कि वोह शैत़ान के इस हथियार **उ़ज्ब** या'नी ''ख़ुद पसन्दी'' की ता'रीफ़ और इस की तबाह कारियों पर नज़र रखें । **ख़ुद पसन्दी** की ता'रीफ़ येह है : अपने कमाल (म-सलन इ़ल्म या अ़मल या माल) को अपनी त़रफ़ निस्बत करना और इस बात का ख़ौफ़ न होना कि येह छिन जाएगा । गोया ख़ुद पसन्द शख़्स ने'मत को मुन्इ़मे ह़क़ीक़ी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ मन्सूब करना ही भूल जाता है। (या'नी मिली हुई ने'मत म-सलन सिह़्ह़त या हुस्नो जमाल या दौलत या ज़िहानत या ख़ुश इल्ह़ानी या मन्सब वग़ैरा को अपना कारनामा समझ बैठना और येह भूल जाना कि सब रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की इ़नायत है) **(اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۴۰۴)**

ख़ुद पसन्दी की अहम वज़ाह़त

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی लिखते हैं : जो शख़्स इल्म, अ़मल और माल के ज़रीए अपने नफ़्स में कमाल जानता हो उस की ''दो[2] ह़ालतें'' हैं : इन में से **एक** येह है कि उसे उस कमाल के ज़वाल

का ख़ौफ़ हो या'नी इस बात का डर हो कि इस में कोई तब्दीली आ जाएगी या बिल्कुल ही सल्ब और ख़त्म हो जाएगा तो ऐसा आदमी "ख़ुद पसन्द" नहीं होता । **दूसरी** ह़ालत येह है कि वोह इस के ज़वाल (या'नी कम या ख़त्म होने) का ख़ौफ़ नहीं रखता बल्कि वोह इस बात पर ख़ुश और मुत़्मइन होता है कि **अल्लाह तआ़ला** ने मुझे येह ने'मत अ़त़ा फ़रमाई है इस में मेरा अपना कमाल नहीं । येह भी "ख़ुद पसन्दी" नहीं है और इस के लिये एक **तीसरी** ह़ालत भी है जो **ख़ुद पसन्दी** है और वोह येह है कि उसे उस कमाल के ज़वाल (या'नी कम या ख़त्म होने) का ख़ौफ़ नहीं होता बल्कि वोह इस पर मसरूर व मुत़्मइन होता है और उस की मसर्रत का बाइ़स येह होता है कि येह कमाल, ने'मत व भलाई और सर बुलन्दी है, वोह इस लिये ख़ुश नहीं होता कि येह **अल्लाह तआ़ला** की इ़नायत और ने'मत है बल्कि उस (या'नी ख़ुद पसन्द बन्दे) की ख़ुशी की वजह येह होती है कि वोह उसे अपना वस्फ़ (या'नी ख़ूबी) और ख़ुद अपना ही कमाल समझता है वोह इसे **अल्लाह तआ़ला** की अ़त़ा व इ़नायत तसव्वुर नहीं करता । (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۴۵۴)

मैं तो ख़ूब दीन की ख़िदमत करता हूं !

बा'ज़ अवक़ात इन्सान ब ज़ाहिर अच्छे आ'माल करता है लेकिन वोह उस के अपने ह़क़ में अच्छे नहीं होते क्यूं कि शैत़ान का हथियार उस पर चल जाने के सबब वोह उस पर इतराता है कि मैं बहुत नेक काम करता हूं, ख़ूब दीन की ख़िदमत करता हूं, मैं ने येह भी किया और वोह भी किया, वोह येह भूल जाता है कि मुझे इस की तौफ़ीक़ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने अ़त़ा फ़रमाई है, ऐसे इतराने वालों को डर जाना चाहिये कि पारह

16 **सू-रतुल कहफ़** आयत नम्बर 104 में रब्बुल इ़बाद का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है :

وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿۱۰۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह इस ख़याल में हैं कि हम अच्छा काम कर रहे हैं।

इस आयते करीमा के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत**, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि बदकार से ज़ियादा बद नसीब वोह नेककार है जो मेह़नत उठा कर नेकियां करे मगर उस की कोई नेकी उस के काम न आवे, वोह धोके में रहे कि मैं नेककार हूं। ख़ुदा की पनाह। (नूरुल इ़रफ़ान, स. 485)

मैं ने येह किया ! मैं ने वोह किया !

अपने आ'माल को "कुछ" समझना और इस पर इतराना और अपने मुंह मिया मिठ्ठू बनना कि "मैं ने येह किया ! वोह किया !" येह बुरी सिफ़त है **अल्लाह तआ़ला** पारह 27 **सू-रतुन्नज्म** आयत नम्बर 32 में इर्शाद फ़रमाता है :

هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿۳۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह तुम्हें ख़ूब जानता है तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में ह़म्ल थे तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ, वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं।

इस आयते करीमा के तह़्त **मुफ़स्सिरे** शहीर, **ह़कीमुल उम्मत**, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : येह आयत उन

लोगों के मु-तअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई जो अपनी नेकियों पर फ़ख़्र करते थे और फ़ख़्रिया कहते थे कि हमारी नमाज़ें ऐसी हैं ! हमारे रोज़े ऐसे हैं ! हम ऐसे ! उस (या'नी **अल्लाह तआ़ला**) ही का जानना काफ़ी है तुम अपने तक़्वा त़हारत का लोगों में क्यूं ए'लान करते हो ! लुत़्फ़ तो जब है कि बन्दा कहे : ''मैं गुनहगार हूं'' रब (عَزَّوَجَلَّ) कहे : येह परहेज़ गार है ! जैसे अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) (नूरुल इ़रफ़ान, स. 841, 842)

इस आयते करीमा के तह़्त **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : इस का मा'ना येह है कि जब तुम अच्छा अ़मल करो तो येह न कहो : **''मैं ने अ़मल किया ।''** **(اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص ۴۵۲)**

ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत पर बुज़ुर्गाने दीन के 5 फ़रामीन

﴿1﴾ **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया कि आदमी गुनहगार कब होता है ? फ़रमाया : जब उसे येह गुमान हो कि मैं **नेकूकार** या'नी नेक आदमी हूं । **(اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص ۴۵۲)**

﴿2﴾ मश्हूर ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : अपने आप को नेकूकार मत क़रार दो क्यूं कि येह ख़ुद पसन्दी है । **(ایضاً)**

﴿3﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना **मुत़र्रिफ़** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं रात भर इबादत करूं और सुब्ह़ **ख़ुद पसन्दी** में पड़ूं या'नी येह समझूं कि मैं तो बड़ा नेक आदमी हूं इस से बेहतर येही है कि रात सोया रहूं और सुब्ह़ रात की इबादत से मह़रूमी पर अफ़्सोस करूं । **(ایضاً)**

﴿4﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر उन लोगों में से थे जिन को देख कर **अल्लाह तआ़ला** और आख़िरत का घर याद आता है, क्यूं कि वोह इबादत की पाबन्दी करते थे । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक दिन नमाज़ पढ़ी, एक शख़्स पीछे खड़ा देख रहा था । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सलाम फैरा तो (ख़ौफ़े ख़ुदा से मग़्लूब हो कर ख़ुद पसन्दी से बचने के लिये बत़ौरे आ़जिज़ी) फ़रमाया : जो कुछ मुझ से देखा है इस से तुम्हें तअ़ज्जुब नहीं होना चाहिये क्यूं कि शैत़ाने लईन ने फ़िरिश्तों के हमराह एक त़वील अ़र्सा **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इबादत की फिर उस का जो अन्जाम हुवा वोह वाज़ेह़ व ज़ाहिर है । (ایضاً ص۴۵۳)

﴿5﴾ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : नेक कामों की तौफ़ीक़ **अल्लाह तआ़ला** की ने'मतों में से एक ने'मत और उस के अ़त़िय्यात में से एक अ़त़िय्या (या'नी बख़्शिश) है लेकिन **ख़ुद पसन्दी** ही की वजह से नादान इन्सान अपनी ज़ात की ता'रीफ़ करता और पाकीज़गी ज़ाहिर करता है और जब वोह अपनी राय, अ़मल और अ़क़्ल पर इतराता है तो फ़ाएदा ह़ासिल करने, मश्वरा लेने और पूछने से बाज़ रहता और यूं अपने आप पर और अपनी राय पर ए'तिमाद करता है । (कि मैं भी तो समझ बूझ रखता हूं, क्या ज़रूरत है कि दूसरों से मश्वरा लूं !) (ایضاً ص۸۲۲) आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : आ़बिद को अपनी इबादत पर, आ़लिम को अपने इ़ल्म पर, ख़ूब सूरत को अपनी ख़ूब सूरती और ह़ुस्नो जमाल पर और मालदार को अपनी मालदारी पर इतराने का कोई ह़क़ नहीं पहुंचता क्यूं कि सब कुछ **अल्लाह तआ़ला** के फ़ज़्लो करम से

है । (ایضاً ص۸۳۶) या'नी ज़िहानत, इलाज करने की सलाहिय्यत, ख़ुश इल्हानी व ख़ुश बयानी वग़ैरा की ने'मत वग़ैरा जिस को जो कुछ मिला उस में बन्दे का अपना कोई कमाल ही नहीं जो दिया जितना दिया सब **अल्लाह तआ़ला** ने ही दिया है ।

ख़ुद पसन्दी का इलाज

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان (**मुत्तक़ी** व परहेज़ गार और सिद्क़ो इख़्लास के पैकर होने के बा वुजूद ख़ुदा के डर के सबब) तमन्ना किया करते थे कि काश ! वोह मिट्टी, तिन्के और परिन्दे होते । (ताकि बुरे ख़ातिमे और अ़ज़ाबे क़ब्रो आख़िरत से बे ख़ौफ़ होते) तो जब सह़ाबा की येह कैफ़िय्यत थी तो कोई साह़िबे बसीरत (समझदार शख़्स) किस त़रह़ अपने अ़मल पर इतरा सकता या नाज़ कर सकता है और किस त़रह़ अपने नफ़्स के मुआ़-मले में बे ख़ौफ़ रह सकता है ! तो येह (या'नी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ख़ौफ़ और उन की आ़जिज़ी ज़ेह्न में रखना) **ख़ुद पसन्दी का इलाज** है और इस से इस का माद्दा बिल्कुल जड़ से उखड़ जाता है और जब येह (या'नी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के डरने का अन्दाज़) दिल पर ग़ालिब आता है तो सल्बे ने'मत (या'नी ने'मत छिन जाने) का ख़ौफ़ इसे इतराने (और ख़ुद को "कुछ" समझने से) बचाता है बल्कि जब वोह काफ़िरों और फ़ासिक़ों को देखता है कि किसी ग़-लत़ी के बिग़ैर ही जब उन (या'नी काफ़िरों) को ईमान से मह़रूम रहना पड़ा और उन (या'नी फ़ासिक़ों) को इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से हाथ धोना पड़ा तो वोह (या'नी सह़ाबए किराम का ख़ौफ़

याद रखने वाला शख़्स) अपने ह़क़ में डरते हुए येह बात समझ लेता है कि रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की ज़ात बे नियाज़ है वोह चाहे तो किसी को किसी जुर्म के बिग़ैर ही मह़रूम कर दे और जिसे चाहे किसी वसीले के बिग़ैर ही अ़ता कर दे। ख़ुदाए बे नियाज़ عَزَّوَجَلَّ अपनी दी हुई ने'मत भी वापस ले सकता है। कितने ही मोमिन (مَعَاذَاللہ) मुरतद हो गए जब कि बे शुमार परहेज़ गार व इत़ाअ़त गुज़ार फ़ासिक़ हो गए और उन का ख़ातिमा अच्छा न हुवा। इस त़रह़ की सोच से **ख़ुद पसन्दी** ख़त्म हो जाती है। (ایضاً ص۴۵۸)

ह़ुब्बे जाहो ख़ुद पसन्दी की मिटा दे आ़दतें
या इलाही ! बाग़े जन्नत की अ़त़ा कर राह़तें

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

इख़्लास

प्यारे म-दनी बेटे ! याद रखिये ! येह भी शैत़ान का एक बहुत बड़ा और बुरा **हथियार** है कि आदमी को इस ख़ुश फ़हमी में मुब्तला कर दे कि मैं बहुत अच्छा इन्सान हूं और मैं ने इस्लाम की बहुत ख़िदमत की है। शैत़ान के इस वार को नाकाम बनाते हुए बस येही ज़ेह्न बना लीजिये कि अपने त़ौर पर मैं ने अब तक कोई दीन का काम किया है न ही अच्छे आ'माल, मैं कुछ भी नहीं, मैं सब से बुरा हूं। नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई तौफ़ीक़ से अगर कोई नेकी का मौक़अ़ नसीब हो भी जाए तो उसे ज़ेवरे **इख़्लास** से मुज़य्यन कीजिये। **अल्लाह तआ़ला** ब वसीलए मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप को और आप के सदक़े मुझ

गुनहगारों के सरदार को अपना मुख़्लिस बन्दा बनाए । आमीन । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो बन्दा चालीस दिन ख़ालिस **अल्लाह तआ़ला** के लिये अ़मल करे **अल्लाह तआ़ला** ह़िक्मत के चश्मे उस के दिल से उस की ज़ुबान पर ज़ाहिर कर देता है।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج ۱ ص ۲٤ حدیث ۱۳)

इख़्लास की 5 ता'रीफ़ात

﴿1﴾ सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करना और मख़्लूक़ की ख़ुशनूदी या अपनी किसी नफ़्सानी ख़्वाहिश को उस में शामिल न होने देना ﴿2﴾ ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी ह़-नफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : इख़्लास इस चीज़ का नाम है कि बन्दा अ़मल से सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करने का इरादा करे, किसी क़िस्म का दुन्यवी नफ़्अ़ मक़्सूद न हो। (اَلْحَدِیْقَۃُ النَّدِیَّۃ ج ۲ ص ٦٤۲) ﴿3﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा मर-अ़शी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **इख़्लास** इस चीज़ का नाम है कि ज़ाहिरो बात़िन (अकेले और दूसरों की मौजू-दगी) में बन्दे का अ़मल बराबर हो। (اَلْمَجْمُوع لِلنَّوَوی ج ۱ ص ۱۷) ﴿4﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़ासिबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**इख़्लास** येह है कि जो रब عَزَّوَجَلَّ का मुआ़-मला हो उस में से मख़्लूक़ को निकाल दे।" (اِحیاءُ الْعُلوم ج ٥ ص ۱۱۰) ﴿5﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन **अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इख़्लास येह है कि ख़ल्वत व जल्वत (या'नी तन्हाई और दूसरों की मौजू-दगी) में बन्दे की ह़-रकात व स-कनात सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हों, इस में नफ़्स, ख़्वाहिश या दुन्या का कोई दख़्ल न हो। (اَلْمَجْمُوع لِلنَّوَوی ج ۱ ص ۱۷)

इख़्लास के मा'ना
"रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल करना"

इख़्लास इ़बादत की रूह़ है, **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इ़बादत कोई भी हो उस में **इख़्लास** निहायत ज़रूरी चीज़ है या'नी मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल करना ज़रूर है। दिखावे के त़ौर पर अ़मल करना बिल इज्माअ़ ह़राम है, बल्कि ह़दीस में रिया को शिर्के असग़र फ़रमाया। **इख़्लास** ही वोह चीज़ है कि इस पर सवाब मुरत्तब होता है, हो सकता है कि अ़मल सह़ीह़ न हो मगर जब **इख़्लास** के साथ किया गया हो तो उस पर सवाब मुरत्तब हो म-सलन ला इ़ल्मी में किसी ने **नजिस** (या'नी नापाक) पानी से वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ ली अगर्चे येह नमाज़ सह़ीह़ न हुई कि सिह़्ह़त (या'नी दुरुस्त होने) की शर्त़ त़हारत (पाकी) थी वोह नहीं पाई गई मगर उस ने सिद्क़े निय्यत (या'नी सच्ची निय्यत) और **इख़्लास** के साथ पढ़ी है तो सवाब का तरत्तुब है या'नी इस नमाज़ पर सवाब पाएगा मगर जब कि बा'द में मा'लूम हो गया कि नापाक पानी से वुज़ू किया था तो (नमाज़ न हुई और) वोह मुत़ा-लबा जो उस के ज़िम्मे है साक़ित़ न होगा, वोह ब दस्तूर क़ाइम रहेगा उस को अदा करना होगा।"

(बहारे शरीअ़त, जिल्द : 3, स. 636)

इख़्लास येह है कि "अपने अ़मल की ता'रीफ़" ना पसन्द हो

जिन का ज़ेह्न येह होता है कि हम ने बहुत सारा इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया, ता'लीमे इ़ल्मे दीन के इम्तिह़ान में दूसरों से मुमताज़ आए,

इतना इतना इस्लाम का काम किया, किताबें तस्नीफ़ कीं, फ़ुलां फ़ुलां अच्छे आ'माल किये, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में इतना इतना अ़र्सा सफ़र किया, हमारी ता'रीफ़ व ह़ौसला अफ़्ज़ाई होनी चाहिये, हमें तोह़फ़ा व इन्आ़म दिया जाना चाहिये, वोह **शैत़ान का हथियार** नाकाम बनाते हुए इस ह़िकायत से दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना ईसा **रूहु़ल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ह़वारियों ने अ़र्ज़ की : किस का अ़मल ख़ालिस है ? फ़रमाया : उस का जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के लिये अ़मल करता है और उसे येह बात पसन्द नहीं होती कि इस (अ़मल) पर उस की कोई ता'रीफ़ करे !** (اِحیاءُ الْعُلوم ج٥ص١١٠)

"इख़्लास" के पांच हु़रूफ़ की निस्बत से इख़्लास के मु-तअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के 5 फ़रामीन

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब **मक्फ़ूफ़** رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियां इस त़रह़ छुपाए जिस त़रह़ अपने गुनाह छुपाता है। (اِحیاءُ الْعُلوم ج٥ ص ١٠٥) ﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अगर तुम **इख़्लास** के साथ अ़ला-ह़-दगी में दो² रक्अ़तें पढ़ो तो येह बात तुम्हारे लिये **70** या **700** अह़ादीस उ़म्दा अस्नाद के साथ लिखने से बेहतर है। (ایضاص١٠٦) **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : आदमी का ऐसी जगह नफ़्ल नमाज़ पढ़ना जहां लोग उसे न देखते हों, लोगों के सामने अदा की जाने वाली 25 नमाज़ों के बराबर है। (جَمْعُ الْجَوامِع ج٥ص٨٣حدیث١٣٦٢٠) ﴾3﴿ एक बुज़ुर्ग का क़ौल है : एक

साअ़त का **इख़्लास** हमेशा की नजात का बाइ़स है लेकिन इख़्लास बहुत कम पाया जाता है । (اِحیاءُ الْعُلوم ج ۵ ص ۱۰۶) ﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स रियासत (या'नी इक़्तिदार और दूसरों पर बर-तरी) का पियाला पीता है वोह बन्दगी के **इख़्लास** से निकल जाता है । (ایضاً ص ۱۱۰) ﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : लोगों की वजह से अ़मल छोड़ना **रिया** है और मख़्लूक़ को दिखाने के लिये अ़मल करना शिर्के (असग़र) है । (ایضاً ص ۱۱۰)

तीन अ़त़ाएं तीन मह़रूमियां

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : **अल्लाह तआ़ला** जब किसी बन्दे को ना पसन्द करता है तो उसे तीन बातें अ़त़ा करता है और तीन बातों से रोक देता है ﴾1﴿ उसे सालिह़ीन (या'नी नेक बन्दों) की सोह़बत तो अ़त़ा करता है मगर वोह बन्दा उन की कोई बात क़बूल नहीं करता ﴾2﴿ उसे अच्छे आ'माल की तौफ़ीक़ तो देता है लेकिन उसे **इख़्लास** से नहीं नवाज़ता ﴾3﴿ उसे ह़िक्मत तो इ़नायत फ़रमाता है लेकिन उसे उस में सदाक़त से मह़रूम रखता है । (ایضاً ص ۱۰۶)

30 बरस की नमाज़ें क़ज़ा कीं

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने 30 बरस की नमाज़ें क़ज़ा कीं, वजह इस की येह हुई कि मैं हमेशा हर नमाज़ पहली सफ़ में बा जमाअ़त अदा करता रहा । 30 बरस के बा'द किसी मजबूरी के सबब ताख़ीर हो गई और मुझे दूसरी सफ़ में जगह मिली, इस से मुझे शरमिन्दगी मह़सूस हुई कि आज लोग क्या कहेंगे ! येह ख़याल आने के सबब मैं जान

गया कि जब लोग मुझे पहली सफ़ में देखते थे तो इस से मुझे ख़ुशी होती थी और येह बात मेरे दिल की राह़त का बाइ़स थी । (वरना मुझे शरमिन्दगी होती ही क्यूं, कि आज लोग क्या कहेंगे ! तो गोया 30 बरस से मैं लोगों को दिखाने के लिये पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ता रहा हूं !)

(اِحیاءُ الْعُلوم ج۵ص۱۰۸ بِتَصَرُّفٍ)

ह़िकायत : न सवाब मिला न अ़ज़ाब

एक त़वील रिवायत में है कि एक बुज़ुर्ग ने वफ़ात के बा'द किसी के ख़्वाब में फ़रमाया : मैं ने एक स-दक़ा लोगों के सामने दिया तो उन का मेरी त़रफ़ देखना मुझे पसन्द आया तो मैं ने इन्तिक़ाल के बा'द देखा कि न तो मुझे इस का सवाब मिला और न ही इस पर अ़ज़ाब हुवा । ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی को जब येह वाक़िआ़ बताया गया तो फ़रमाया : "येह उन का अच्छा माल है कि अ़ज़ाब न हुवा येह तो ऐ़न एह़सान है ।" (اِحیاءُ الْعُلوم ج۵ ص ۱۰۵)

मुबल्लिग़ पर शैत़ान का वार

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : (बा'ज़ वाइ़ज़ीन व मुबल्लिग़ीन) इस बात पर ख़ुश होते हैं कि लोग इन की बात तवज्जोह से सुनते और क़बूल करते हैं और ऐसा वाइ़ज़ (या मुबल्लिग़) दा'वा करता है कि मेरी ख़ुशी का बाइ़स येह है कि **अल्लाह तआ़ला** ने दीन की ह़िमायत मेरे लिये आसान कर दी । अगर उस (वाइ़ज़ या मुबल्लिग़) का कोई हम-अ़स्र उस से अच्छा वा'ज़ (व बयान) करता हो और लोग इस से हट कर उस की त़रफ़ **मु-तवज्जेह** हो जाएं तो येह बात

उसे बुरी लगती है और वोह ग़मगीन हो जाता है, अगर (उस के अन्दर **इख़्लास** होता और) इस के वा'ज़ (व बयान) का बाइ़स दीन होता (और उस के पेशे नज़र सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा होती तब) तो वोह **अल्लाह तआ़ला** का शुक्र अदा करता कि **अल्लाह तआ़ला** ने येह काम दूसरे के सिपुर्द कर दिया। ऐसे मौक़अ़ पर शैत़ान उस से कहता है : तू इस लिये ग़मगीन नहीं कि लोग तुझे छोड़ कर दूसरी त़रफ़ चले गए बल्कि तेरे ग़म का सबब येह है कि तुझ से सवाब चला गया क्यूं कि अगर वोह लोग तेरी बात से नसीह़त ह़ासिल करते तो तुझे सवाब मिलता और तेरा सवाब के चले जाने पर ग़मगीन होना अच्छा है और **इस बेचारे** (मुक़र्रिर या मुबल्लिग़) **को मा'लूम नहीं कि तब्लीग़ का काम अपने से अफ़्ज़ल को सोंपना ज़ियादा सवाब का बाइ़स है और ख़ुद तन्हा तब्लीग़ करने के मुक़ाबले में इस सूरत में सवाब ज़ियादा होगा।**

(اِحیاءُ الْعُلوم ج۲ص ۱۰۹ مُلَخَّصاً)

आ़लिम की दो[2] रक्अ़तें जाहिल की साल भर की इ़बादत से अफ़्ज़ल

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : दिल की खोट, शैत़ान का मक्रो फ़रेब और नफ़्स की ख़बासत निहायत पोशीदा होती है, इसी लिये कहा गया है : "आ़लिम की दो रक्अ़तें जाहिल की एक साल की इ़बादत से अफ़्ज़ल हैं।" और इस से वोह आ़लिम मुराद है जो आ'माल की बारीक व दक़ीक़ आफ़ात की बसीरत (पहचान) रखता हो ताकि इन आफ़ात से अपने आ'माल को साफ़ कर सके क्यूं कि जाहिल की नज़र ज़ाहिरी इ़बादत पर होती है और इसी से वोह धोका खा जाता है। (ایضاً ص۱۱۲)

ह़िकायत : 60 साल का 'बे का ख़ादिम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी रव्वाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد ने फ़रमाया : मैं इस घर (का'बतुल्लाह शरीफ़) का 60 साल मुजाविर (या'नी ख़ादिम) रहा और मैं ने **60 ह़ज** किये (फिर इन्किसारन फ़रमाने लगे) लेकिन मैं ने **अल्लाह तआ़ला** के लिये जो भी अ़मल किया उस में जब अपने नफ़्स का मुह़ा-सबा किया (या'नी जब इन आ'माल की जांच पड़ताल की, इख़्लास टटोला तो इस क़दर कम निकला कि) शैत़ान का ह़िस्सा **अल्लाह तआ़ला** के ह़िस्से से ज़ियादा पाया ! काश ! मेरा ह़िसाब बराबर हो अगर (आख़िरत में) नफ़्अ़ न हो तो नुक़्सान भी न हो । (ایضاص ۱۱۵) इख़्लास की कमी, ख़ुद पसन्दी, रिया वग़ैरा शैत़ान का ह़िस्सा हैं जब कि अ़मल में मुकम्मल इख़्लास होना **अल्लाह तआ़ला** का ह़िस्सा है ।

बद गुमानी भरी इ़बारत की निशान देही

प्यारे म-दनी बेटे ! शैत़ान का हथियार पहचानने की कोशिश करते हुए आप अपनी मेइल के इन जुम्लों पर ग़ौर फ़रमाइये : **''अब दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान की शफ़्क़तें सिर्फ़ अमीर लोगों के लिये हैं ।''**..... ''अगर मैं अमीर होता तो ऐसा न होता'' नीज़ मक्तूब के आख़िर में दिया हुवा शे'र भी बे मह़ल होने की वजह से अपने इस्लामी भाइयों पर भरपूर त़न्ज़ और इन की तौहीन व तह़क़ीर पर मुश्तमिल है । आप की मेइल में बा'ज़ ज़िम्मेदारान के तअ़ल्लुक़ से येह भी गिले शिक्वे किये गए हैं कि ''ता'ज़ियत नहीं की, या फ़ुलां ने **ता'ज़ियत** का फ़ोन किया तो ईसाले सवाब नहीं किया, फ़ुलां फ़ुलां को **मजलिसे ईसाले सवाब** की दा'वत दी मगर नहीं आए..... **क्यूं कि ग़रीब आदमी हूं''**

वग़ैरा । इस त़रह़ की शिकायात उन मुसल्मानों की इ़ज़्ज़त उछालने वाली और उन्हें डी ग्रेड करने वाली हैं । साथ में मज़ीद येह अल्फ़ाज़ ''क्यूं कि मैं ग़रीब आदमी हूं'' में **बद गुमानी** का वाज़ेह़ इशारा मौजूद है क्यूं कि इस का साफ़ मत़लब येही निकलता है कि मैं मालदार होता तो मेरे यहां ज़रूर आते । नीज़ मेइल में यहां बा'ज़ के नाम नहीं मगर इशारों की तरकीब है जिस से कई ज़िम्मेदारान को उन इस्लामी भाइयों की पहचान हो सकती है ।

बद गुमानी की तबाह कारियां

मेइल में येह इज़्हार नहीं किया गया कि येह शिकायात इस लिये की गई हैं कि फ़ुलां फ़ुलां की इस्लाह़ की जाए बल्कि सिर्फ़ ''भड़ास'' निकाली गई है जिन का बद गुमानियों पर मब्नी होना ज़ाहिर है । शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा **हथियार** है, येह **बद गुमानी** ख़ानदानों को उजाड़ देती और बसा अवक़ात दीनी ख़िदमात में रख़्ना अन्दाज़ हो कर एक दूसरे के ख़िलाफ़ ''लॉबिंग'' पर उभारती, ग़ीबतों, चुग़्लियों और तोह्मतों, दिल आज़ारियों वग़ैरा गुनाहों का सैलाब लाती, दुन्या का सुकून बरबाद करने के साथ साथ आख़िरत की बरबादी के अस्बाब बनाती और यूं शैत़ान की मुराद बर लाती है । शैत़ान के इस ख़ौफ़नाक **हथियार** ''बद गुमानी'' की तबाह कारियों के मु-तअ़ल्लिक़ कुछ मा'रूज़ात पेशे ख़िदमत हैं **:** पारह 26 **सू-रतुल हुजुरात** आयत नम्बर 12 में रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे पाक है **:**

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है ।

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर शीराज़ी बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى कस्रते गुमान से मुमा-न-अ़त की ह़िक्मत बयान करते हुए "तफ़्सीरे बैज़ावी" में लिखते हैं : "ताकि मुसल्मान हर गुमान के बारे में **मोह़तात़** हो जाए और ग़ौरो फ़िक्र करे कि येह गुमान किस क़बील (या'नी क़िस्म) से है।" (आया अच्छा है या बुरा ?) (تفسیر بیضاوی ج۵ص۲۱۸)

इस आयते करीमा में बा'ज़ गुमानों को गुनाह क़रार देने की वजह बयान करते हुए इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى लिखते हैं : "क्यूं कि किसी शख़्स का काम (बा'ज़ अवक़ात) देखने में तो बुरा लगता है मगर ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता, मुम्किन है कि करने वाला उसे भूल कर कर रहा हो या देखने वाला ही ख़ुद ग़-लत़ी पर हो।" (تفسیرِ کبیر ج ۱۰ ص ۱۱۰)

बद गुमानी ह़राम है

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **(1) बद गुमानी** से बचो बेशक बद गुमानी बद तरीन झूट है। (بُخاری ج۳ص۴۴۶حدیث۵۱۴۳)

(2) मुसल्मान का ख़ून, माल और इस से **बद गुमानी** (दूसरे मुसल्मान पर) ह़राम है। (شُعَبُ الْاِیمان ج۵ص۲۹۷حدیث ۶۷۰۶)

बद गुमानी की ता'रीफ़

बद गुमानी से मुराद येह है कि "बिला दलील दूसरे के बुरे होने का दिल से ए'तिक़ादे जाज़िम (या'नी यक़ीन) करना।" (ماخوذ از:فَیضُ القدیر ج ۳ص۱۲۲ تحتَ الحدیث ۲۹۰۱وغیرہ) बद गुमानी से **बुग़्ज़** और **ह़सद** जैसे बात़िनी अमराज़ भी पैदा होते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़युब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : **حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ** या'नी "**अच्छा गुमान अच्छी इबादत से है।**" **(ابوداوٗد ج٤ ص٣٨٧ حديث٤٩٩٣)**

ख़ुदाया अ़ता कर दे रह़मत का पानी
रहे क़ल्ब उजला धुले बद गुमानी

बद गुमानी क्यूं ह़राम है

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : "**बद गुमानी** के ह़राम होने की वजह येह है कि दिल के भेदों को सिर्फ़ **अल्लाह तआ़ला** जानता है, लिहाज़ा तुम्हारे लिये किसी के बारे में **बुरा गुमान** रखना उस वक़्त तक जाइज़ नहीं जब तक तुम उस की बुराई इस त़रह़ ज़ाहिर न देखो कि इस में तावील (या'नी बचाव की दलील) की गुन्जाइश न रहे, पस उस वक़्त तुम्हें ला मुह़ाला (या'नी नाचार) उसी चीज़ का यक़ीन रखना पड़ेगा जिसे तुम ने जाना और देखा है और अगर तुम ने उस की बुराई को न अपनी आंखों से देखा और न ही कानों से सुना मगर फिर भी तुम्हारे दिल में उस के बारे में बुरा गुमान पैदा हो तो समझ जाओ कि **येह बात** तुम्हारे दिल में शैत़ान ने डाली है, उस वक़्त तुम्हें चाहिये कि दिल में आने वाले **उस गुमान को झुटला दो** क्यूं कि येह (बद गुमानी) सब से बड़ा फ़िस्क़ है।" मज़ीद लिखते हैं : "यहां तक कि अगर किसी शख़्स के मुंह

से शराब की बू आ रही हो तो उस को शर-ई ह़द लगाना जाइज़ नहीं क्यूं कि हो सकता है कि उस ने शराब का घूंट भरते ही कुल्ली कर दी हो या किसी ने उसे ज़बर दस्ती शराब पिला दी हो, जब येह सब एह़तिमालात (या'नी शुबुहात) मौजूद हैं तो (सुबूते शर-ई के बिग़ैर) महज़ क़ल्बी ख़यालात की बिना पर तस्दीक़ कर देना और उस मुसल्मान के बारे में (शराबी होने की) **बद गुमानी** करना जाइज़ नहीं है।'' (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۱۸۶)

बद गुमानी बहुत बड़ी और बुरी आफ़त है, येह इन्सान को जहन्नम में पहुंचा सकती है, इस के बारे में ज़रूरी अह़काम और इस का इलाज जानना ''फ़र्ज़'' है।

"حُسْنُ الظَّنّ" के सात ह़रूफ़ की निस्बत से बद गुमानी के मुख़्तसरन 7 इलाज

﴾1﴿ मुसल्मान की ख़ूबियों पर नज़र रखिये

मुसल्मानों की ख़ामियों की टटोल के बजाए उन की **ख़ूबियों पर नज़र रखिये,** जो इन के मु-तअ़ल्लिक़ **हुस्ने ज़न** रखता है उस के दिल में राह़तों का बसेरा और जिस पर शैत़ान का हथियार काम कर जाए और वोह **बद गुमानी** की बुरी आ़दत में मुब्तला हो जाए, उस के दिल में वह़शतों का डेरा होता है।

﴾2﴿ बद गुमानी हो तो तवज्जोह हटा दीजिये

जब भी किसी मुसल्मान के बारे में दिल में **बुरा गुमान** आए तो उसे झटक दीजिये और उस के अ़मल पर **अच्छा गुमान** क़ाइम करने की कोशिश फ़रमाइये। **म-सलन** किसी इस्लामी भाई को ना'त या बयान

सुनते हुए रोता देख कर आप के दिल में उस के मु-तअ़ल्लिक़ **रियाकारी** की बद गुमानी पैदा हो तो फ़ौरन इस के **इख़्लास से** रोने के बारे में हुस्ने ज़न क़ाइम कर लीजिये । ह़ज़रते सय्यिदुना **मक्ह़ूल दिमश्क़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "जब तुम किसी को रोता देखो तो ख़ुद भी रोओ और उसे **रियाकार** न समझो, मैं ने एक दफ़्आ़ किसी शख़्स के बारे में येह ख़याल किया तो मैं **एक साल** तक रोने से मह़रूम रहा ।"

(تَنبِيهُ الْمُغتَرِّيْن ص١٠٧)

ख़ुदा ! बद गुमानी की आ़दत मिटा दे
मुझे हुस्ने ज़न का तू आ़दी बना दे

﴾3﴿ ख़ुद नेक बनिये ताकि दूसरे भी नेक नज़र आएं

अपनी इस्लाह़ की कोशिश जारी रखिये क्यूं कि जो ख़ुद **नेक** हो वोह दूसरों के बारे में भी **नेक गुमान** (या'नी अच्छे ख़यालात) रखता है जब कि जो ख़ुद **बुरा** हो उसे दूसरे भी **बुरे** ही दिखाई देते हैं । अ़-रबी मक़ूला है : **اِذَا سَاءَ فِعْلُ الْمَرْءِ سَاءَتْ ظُنُوْنُهٗ या'नी** जब किसी के काम बुरे हो जाएं तो उस के गुमान (या'नी ख़यालात) भी बुरे हो जाते हैं । (فیض القدیر، ج٣، ص١٥٧) इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं : **"ख़बीस गुमान ख़बीस दिल ही से निकलता है ।"**

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 400)

मेरा तन सफ़ा हो मेरा मन सफ़ा हो
ख़ुदा हुस्ने ज़न का ख़ज़ाना अ़त़ा हो

﴾4﴿ बुरी सोह़बत बुरे गुमान पैदा करती है

बुरी सोह़बत से बचते हुए **नेक सोह़बत** इख़्तियार कीजिये, जहां दूसरी ब-र-कतें मिलेंगी वहीं **बद गुमानी** से बचने में भी मदद ह़ासिल होगी । ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन ह़ारिस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : صُحْبَةُ الْاَشْرَارِ تُوْرِثُ سُوْءَ الظَّنِّ بِالْاَخْيَارِ **या'नी** बुरों की सोह़बत अच्छों से **बद गुमानी** पैदा करती है । (رسالۂ قشیریہ ص۳۲۷)

बुरी सोह़बतों से बचा या इलाही
तू नेकों का संगी बना या इलाही

﴾5﴿ किसी से बद गुमानी हो तो अ़ज़ाबे इलाही से ख़ुद को डराइये

जब भी दिल में किसी मुसल्मान के बारे में **बद गुमानी** पैदा हो तो ख़ुद को **बद गुमानी के अन्जाम** और **अ़ज़ाबे इलाही** से डराइये । पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** की आयत नम्बर 36 में **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इ़ल्म नहीं बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है ।

मीठे मीठे म-दनी बेटे ! किसी के बारे में बद गुमानी पैदा हो तो अपने आप को इस त़रह़ डराइये कि बड़ा अ़ज़ाब तो दूर रहा मेरी ह़ालत तो येह है कि **जहन्नम** का सब से हलका अ़ज़ाब भी बरदाश्त नहीं

कर सकूंगा । आह ! हलका अ़ज़ाब भी किस क़दर होलनाक है ! बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''दोज़ख़ियों में सब से हलका अ़ज़ाब जिस को होगा उसे **आग के जूते** पहनाए जाएंगे जिन से उस का **दिमाग़ खौलने** लगेगा ।''

(بُخاری ج ٤ ص ٢٦٢ حدیث ٦٥٦١)

जहन्नम से मुझ को बचा या इलाही

मुझे नेक बन्दा बना या इलाही

﴾6﴿ किसी के बारे में बद गुमानी पैदा हो तो अपने लिये दुआ़ कीजिये

जब भी किसी के बारे में ''बद गुमानी'' होने लगे तो अपने प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं दुआ़ मांगिये : या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! तेरा येह कमज़ोर बन्दा दुन्या व आख़िरत की तबाही से बचने के लिये इस **बद गुमानी** से अपने दिल को बचाना चाहता है । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे शैत़ान के ख़त़रनाक हथियार ''बद गुमानी'' से बचा ले । मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने ख़ौफ़ से मा'मूर दिल, रोने वाली आंख और लरज़ने वाला बदन अ़त़ा फ़रमा । اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾7﴿ जिस के लिये बद गुमानी हो उस के लिये दुआ़ए ख़ैर कीजिये

जब भी किसी इस्लामी भाई के लिये दिल में **बद गुमानी** आए तो उस के लिये दुआ़ए ख़ैर कीजिये और उस की इ़ज़्ज़तो इक्राम में इ़ज़ाफ़ा कर दीजिये । **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद

मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي इर्शाद फ़रमाते हैं : "जब तुम्हारे दिल में किसी मुसल्मान के बारे में **बद गुमानी** आए तो तुम्हें चाहिये कि उस की **रिआ़यत** (या'नी इ़ज़्ज़त व आव भगत वग़ैरा) में इज़ाफ़ा कर दो और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर करो, क्यूं कि येह चीज़ शैत़ान को ग़ुस्सा दिलाती है और उसे (या'नी शैत़ान को) तुम से **दूर** भगाती है, यूं शैत़ान दोबारा तुम्हारे दिल में **बुरा गुमान** डालते हुए डरेगा कि कहीं तुम फिर अपने भाई की रिआ़यत और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर में **मश्ग़ूल** न हो जाओ ।" (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۱۸۷) (बद गुमानी से मु-तअ़ल्लिक़ ज़ियादा तर मवाद मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले, "**बद गुमानी**" (56 सफ़्ह़ात) से लिया गया है, येह रिसाला मुकम्मल पढ़ना निहायत मुफ़ीद है)

मुझे ग़ीबतो चुग़लियो बद गुमानी
की आफ़ात से तू बचा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो लिखने में ख़त़ा खा जाता है वोह बोलने में न जाने क्या क्या कह जाता होगा !

उ़मूमन आदमी बहुत सोच सोच कर चिठ्ठी वग़ैरा लिखता, लिख कर नोक पलक संवारता और काट छांट करता है ताकि कहीं अपनी कोई ग़लत़ तह़रीर किसी के हाथ में न चली जाए तो अब इतनी एह़तियात़ों के बा वुजूद भी जिस पर शैत़ान का हथियार चल जाता हो और वोह ग़ैर मोह़तात़ या गुनाहों भरे अल्फ़ाज़ लिख डालता हो ख़ुदा जाने जब वोह बोलने पर आता होगा तो उस की ज़ुबान से क्या क्या निकल जाता होगा !

बद गुमानी के बारे में आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा

बद गुमानी के मु-तअ़ल्लिक़ "**फ़तावा र-ज़विय्या**" से मुख़्तसर कर्दा सुवाल जवाब मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

सुवाल : ज़ैद कहता है आज कल उ़मूमन फ़ख़्रो तफ़ाख़ुर और अपनी वाह वाह करवाने के लिये दा'वतें दी जाती हैं लिहाज़ा वोह या'नी (ज़ैद) किसी दा'वत में नहीं जाता । **जवाब :** क़बूले दा'वत सुन्नत है..... और अब कि एक मुसल्मान पर बिला दलील येह गुमान किया कि इस की निय्यत रिया व तफ़ाख़ुर व नामवरी है तो येह **ह़रामे क़त़्ई** हुवा । ग़ैर मुअ़य्यन पर हुक्म किसी मुअ़य्यन मुसल्मान के लिये समझ लेना **बद गुमानी** है जब तक इस के क़राइने वाज़ेह़ा न हों और बद गुमानी ह़राम ।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 672, 673)

नमाज़े जनाज़ा व ईसाले सवाब के बारे में नाराज़ी से बचाने वाले म-दनी फूल

येह मसाइल ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये : (1) मुसल्मान की नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है जिन जिन को इत्तिलाअ़ मिली उन में से बा'ज़ों ने अदा कर ली तब भी फ़र्ज़ अदा हो चुका तो अब जो नहीं आए वोह गुनहगार नहीं हैं, उन न आने वालों के बारे में बद गुमानियां ज़रूर गुनाह हैं, उन की मुख़ा-लफ़त की हरगिज़ इजाज़त नहीं (2) ता'ज़ियत मस्नून है, ईसाले सवाब या इस की मजलिस में शिर्कत मुस्तह़ब है । इत्तिलाअ़ होने के बा वुजूद अगर किसी ने ता'ज़ियत या मजलिस में शिर्कत न की तो शरअ़न गुनहगार न हुवा, उस पर तोह्मत रखने, ग़ीबत व बद गुमानी करने और उसे बुरा भला कहने वाला ज़रूर गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। ह़क तो येह है कि बिलफ़र्ज़ मजलिस में शिर्कत न करना गुनाह हो तब भी मुसल्मान का पर्दा रखने का हुक्म है, अब जब

कि गुनाह ही नहीं तो फिर उस पर ज़ुबाने त़ा'न खोलना कहां की नेकी है! याद रखिये! **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : हर मुसल्मान की इ़ज़्ज़त, माल और जान दूसरे (मुसल्मान) पर ह़राम है।

(ترمذی ج۳ص۳۷۲حدیث ۱۹۳٤)

दिलजूई न करने के दो नुक़्सानात

हां मुरव्वत का तक़ाज़ा येही है कि अगर जानने वालों में से किसी पर कोई मुसीबत आए तो अख़्लाक़ी त़ौर पर उस के यहां जाना चाहिये। दुख्यारों की दिलजूई से ख़ुद को मह़रूम रखने में दो नुक़्सानात **नुमायां** हैं : (1) ख़ुद अपनी सवाब से मह़रूमी (2) उस दुखी इस्लामी भाई के दिल में वस्वसे आने और उस के म-दनी माह़ोल से दूर हो जाने का अन्देशा।

शख़्सिय्यात से तअ़ल्लुक़ात के मु-तअ़ल्लिक़ अहम वज़ाह़तें

मसाजिद या मदारिस या म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना की ता'मीरात नीज़ दीगर म-दनी कामों के लिये अ़त़िय्यात के ह़ुसूल की ह़िर्स में किसी सरमाया दार से छोटे ज़िम्मेदार का बड़े ज़िम्मेदार की फ़ोन पर बात या मुलाक़ात करवाना यक़ीनन कारे सवाबे आख़िरत है और ह़ुस्ने निय्यत की बिना पर इस में ज़रूर इस्तिह़क़ाक़े जन्नत है, इस त़रह़ की नेकी के अ़ज़ीम म-दनी काम पर तन्क़ीद या गिला शिक्वा हरगिज़ सह़ीह़ नहीं। ऐसा करने वाले ज़िम्मेदारों पर मालदारों की चापलूसी और ख़ुशामद की **बद गुमानी** ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, बल्कि कोई बे सबब भी मालदारों से तअ़ल्लुक़ात रखे तो ह़रज नहीं जब कि कोई और मानेअ़ शर-ई न हो। हां दुन्यादार की सोह़बत और बे मक़्सद दोस्ती में भलाई की उम्मीद कम और नुक़्सान का पहलू ग़ालिब है, ख़ुसूसन उ़-लमा, सु-लह़ा और मुबल्लिग़ीन वग़ैरा को एह़तियात़ अन्सब ताकि लोग बद गुमानियों के गुनाहों में न पड़ें।

क्या शख़्सिय्यत का ता'ज़ियत करना आख़िरत के लिये बाइसे सआ़दत है ?

ख़ूब मा'ज़िरत के साथ अ़र्ज़ है, आप की मेइल के मुत़ाबिक़ आप जनाब की अम्मीजान की ता'ज़ियत के लिये भी तो "बड़ी बड़ी शख़्सिय्यात" का वुरूद हुवा था ! ज़ाहिर है ऐसा बिग़ैर तअ़ल्लुक़ात के नहीं हुवा करता बल्कि बसा अवक़ात बड़ी शख़्सिय्यात के ज़रीए ता'ज़ियत की "सआ़दत" पाने के लिये भी सिफ़ारिशों और तरकीबों की ज़रूरत पड़ती है ! हां म-दनी शख़्सिय्यात या'नी उ़-लमा व सु-लह़ा की तशरीफ़ आ-वरी बेशक सआ़दते दारैन का सबब है । किसी दुन्यवी अफ़्सर की अफ़्सरी से फ़ौत शु-दगान के पस्मान्दगान की वाह वाह तो हो सकती है मगर जो दुन्या से जा चुके उन को आख़िरत का क्या फ़ाएदा पहुंच सकता है ! ब सबबे मन्सब ऐसों की आमद की ख़्वाहिश और आएं तो ख़ुशी फिर फूल फूल कर दूसरों से तज़्किरा करना कि अपने यहां तो फुलां फुलां अफ़्सर व लीडर भी ता'ज़ियत के लिये आया था ! यक़ीन मानिये इस अन्दाज़ में **हुब्बे जाह** (या'नी इ़ज़्ज़त व शोहरत से **मह़ब्बत**) का अन्देशा ब शिद्दत मौजूद है ! बहर ह़ाल "दुन्यवी शख़्सिय्यात" से मुरासिम रखने वाले, इन से फ़ोन पर बात करने करवाने वाले की उन की अपनी निय्यत उन के साथ, हम दिलों पर हुक्म लगाने वाले कौन होते हैं ! हमें उन के बारे में अच्छा सोचना चाहिये, मुसल्मान के अफ़्आ़ल के बारे में **हुस्ने ज़न** रखना ज़रूरी है, आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुसल्मान का फ़े'ल ह़त्तल इम्कान मुह़मिले ह़सन पर मह़मूल (या'नी अच्छा गुमान) करना वाजिब है और "बद गुमानी" **रिया** से कुछ कम ह़राम नहीं । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 324) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : **मुसल्मान का ह़ाल ह़त्तल इम्कान सलाह़** (या'नी भलाई) **पर ह़म्ल करना** (या'नी अच्छा गुमान करना) **वाजिब है।** (ऐज़न, जि. 19, स. 691)

वा'दा कर के न आने वालों के बारे में हुस्ने ज़न

अगर वा'दा कर के भी कोई मजलिसे ईसाले सवाब में न आया तो उस पर **हुस्ने ज़न** ही रखा जाए कि भूल गया होगा, कोई मजबूरी आ पड़ी होगी वग़ैरा। अगर वा'दा करने और याद होने के बा वुजूद भी न आया तब भी बद गुमानी को राह नहीं, क्यूं कि **वा'दा ख़िलाफ़ी** की ता'रीफ़ येह है कि "वा'दा करते वक़्त ही निय्यत येह हो कि मैं जो कह रहा हूं वोह नहीं करूंगा।" लिहाज़ा अगर बा'द में इरादा बदल गया तब भी वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं। मा'लूम हुवा कि वा'दे के बा वुजूद मजलिस में शिर्कत न करने के तअ़ल्लुक़ से हुस्ने ज़न का पहलू मौजूद है।

अपना क़ौल निभाना चाहिये

अलबत्ता "हां" करने वाले को हर मुम्किन सूरत में अपना क़ौल निभाना चाहिये ताकि लोग बदज़न न हों और बद गुमानियों, तोह्मतों, ऐ़ब दरियों और ग़ीबतों के दरवाज़े न खुलें। ख़ुसूसन मौत मय्यित के मुआ़-मले में सभी इस्लामी भाइयों को जनाज़ों में शिर्कत और ता'ज़ियत कर के नीज़ ईसाले सवाब की मजलिसों में ह़ाज़िरी दे कर अपना सवाब खरा कर लेना चाहिये, इस त़रह़ गुनाहों के दरवाज़े बन्द होते और **मह़ब्बतों** के रिश्ते मज़्बूत़ होते हैं। आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 8 **सफ़ह़ा** 98 ता 99 पर नक़्ल करते हैं : ह़दीस में है : "ईमान **बिल्लाह** के बा'द सब से बड़ी अ़क़्ल मन्दी लोगों के साथ **मह़ब्बत** करना है।" (شُعَبُ الْاِیمان ج ٦ ص ٢٥٥ حدیث ٨٠٦١) दूसरी

ह़दीसे सह़ीह़ में है : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا या'नी **मह़ब्बत** फैलाओ नफ़रत न फैलाओ।

(بُخاری ج ۱ ص ۴۲ حدیث ۶۹)

ख़बरदार ! बे जा वज़ाह़त कहीं गुनाहों में न डाल दे

मीठे मीठे म-दनी बेटे ! शैत़ान के हथियार से ख़बरदार ! ऐसे मौक़अ़ पर येह मरदूद आदमी को ख़ूब उक्साता, नासेह़ (या'नी नसीह़त करने वाले) की मुख़ा-लफ़त पर उभारता और दिल के अन्दर वस्वसे डालता है कि झूटमूट यूं और यूं बोल दे कि म-सलन मेरी निय्यत येह नहीं थी, मेरा मक़्सद वोह नहीं था, मेरी मुराद तो येह थी वग़ैरा, मज़ीद येह भी वस्वसा डालता है कि अगर ऐसा नहीं करेगा तो देख तेरी बे इ़ज़्ज़ती हो जाएगी ! अफ़्सोस ! शैत़ान की चाल के सबब बा'ज़ अवक़ात अपनी ग़-लत़ी होने के बा वुजूद ग़लत़ सलत़ वज़ाह़तें शुरूअ़ हो जाती हैं। हां ज़मीर की आवाज़ पर दुरुस्त वज़ाह़त की जा सकती है बल्कि कभी तो ऐसा करना सख़्त ज़रूरी होता है।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

प्यारे म-दनी बेटे ! मुझ से हरगिज़ ख़फ़ा न होना, देखिये ना ! इलाज के लिये मरीज़ को तल्ख़ दवाओं और इन्जेक्शनों के इलावा ज़रूरतन अ़-मले जराह़त (operation) से भी गुज़रना पड़ता है, चूंकि इस में मरीज़ का अपना भला होता है लिहाज़ा वोह नाराज़ होने के बजाए डॉक्टर को ख़त़ीर रक़म अदा करने के साथ साथ उस का शुक्र गुज़ार भी होता है। मैं ने जुरअत कर के शैत़ान के बा'ज़ हथियार आप पर आशकार कर के आप के बा'ज़ "अमराज़" की निशान देही कर के इ़लाज के चन्द म-दनी फूल पेश किये हैं उम्मीद है आप के साथ साथ जिन दीगर इस्लामी भाइयों तक भी येह म-दनी फूल पहुंचेंगे उन के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه

दुन्या व आख़िरत के लिये मुफ़ीद बल्कि मुफ़ीद तरीन साबित होंगे । बहर ह़ाल मैं ने आप की मेइल के तअ़ल्लुक़ से अपनी मोटी समझ के मुत़ाबिक़ जो कुछ अ़र्ज़ किया अगर आप का ज़मीर क़बूल करता है और अपने अन्दर नदामत पाते हैं तो अपनी मेइल की जिन जिन इबारात में गुनाह पाएं उन से तौबा कीजिये और जिन जिन इस्लामी भाइयों की दिल आज़ारी का खटका पाएं इस ज़िम्न में तौबा के साथ साथ उन से मुआ़फ़ी की तरकीब भी फ़रमाएं कि इसी में दुन्या व आख़िरत की भलाई है ।

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
डूब सकती ही नहीं मौजों की त़ुग़यानी में जिस की किश्ती हो मुह़म्मद की निगह़्बानी में
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हर दा'वते इस्लामी वाला मेरा प्यारा है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे इ़नायत से दा'वते इस्लामी का बाग़ ख़ूब फल फूल रहा है, जिस त़रह़ बाप को अपना हर बच्चा और माली को अपने बाग़ का हर फल अ़ज़ीज़ होता है इसी त़रह़ **हर दा'वते इस्लामी वाला मुझे प्यारा है** ख़्वाह वोह म-दनी काम ज़ियादा करता हो या कम, अलबत्ता कमाउ **पुत्तर** सभी को ज़ियादा मीठा लगता है मगर निकम्मी औलाद को भी बाप ज़ाएअ़ नहीं किया करता । मैं हर दा'वते इस्लामी वाले और वाली के ह़क़ में दुआ़एं मांगता हूं, येह सभी मेरे म-दनी बाग़ के फल फूल और कलियां हैं, इन्हीं से बागे़ अ़त्त़ार में म-दनी बहार है । **अल्लाह तआ़ला** मदीने के सदा बहार फूलों के सदक़े मेरे फूलों को सदा मुस्कुराता रखे । **या अल्लाह !** इन के साथ साथ इन की नस्लें भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रह कर दुन्या व आख़िरत की भलाइयां समेटती रहें । और येह सब के सब बे सबब बख़्शे जाएं, येह दुआ़एं मुझ गुनहगार के ह़क़ में भी क़बूल हों ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

म-दनी काम करने वाले मुझे ज़ियादा अ़ज़ीज़ हैं

दा'वते इस्लामी के सरगर्मे अ़मल (Active) ज़िम्मेदारान व मुबल्लिग़ीन मेरे "कमाउ **पुत्तर**" हैं येह मुझे ज़ियादा अ़ज़ीज़ हैं, इन की मुख़ा-लफ़त से मेरे दिल को अज़िय्यत पहुंचती है। मैं जब भी किसी ह़ल्क़े, अ़लाक़े, शह्र या मुल्क के इस्लामी भाइयों की आपसी शकर रन्जियों का सुनता हूं तो दुखी हो जाता हूं कि येह अच्छा ख़ासा म-दनी काम करते करते नादानी पर कहां उतर आए! कहीं ऐसा न हो इन की ग़ैर मोह़तात़ ह़-र-कतों से शैत़ान फ़ाएदा उठा ले और इन्हें नेकियों और सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल से दूर कर दे और दीन के म-दनी कामों को भी नुक़्सान पहुंच जाए! लिहाज़ा मेरे तमाम म-दनी बेटों और म-दनी बेटियों से दस्त बस्ता म-दनी इल्तिजा है कि दिल बड़ा रखा करें और आपस में इफ़्तिराक़ो इन्तिशार की फ़ज़ा क़ाइम न होने दिया करें, अगर तन्ज़ीमन कोई ना ख़ुश गवार मुआ-मला दरपेश हो तो तन्ज़ीमी तरकीब (जो कि म-दनी काम करने वालों को मा'लूम होती है) के मुत़ाबिक़ इस का ह़ल तलाश कीजिये। हरगिज़ येह न हो कि आ़रिज़ी हमदर्दियां ह़ासिल करने के लिये चन्द इस्लामी भाइयों को बता कर आप "लॉबिंग" की सूरत खड़ी कर दें और फिर आप की ही बे एह़तियात़ी के बाइ़स ग़ीबतों चुग़्लियों बद गुमानियों और फ़ितनों का सिल्सिला चल निकले और ख़ुदा न ख़्वास्ता आप की और दूसरों की आख़िरत दाव पर लग जाए।

फ़ितने फैलाने की वईदें

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ग़ीबत की तबाह कारियां**"

सफ़ह़ा 455 ता 456 पर है : जो बद नसीब लोग मुसल्मानों में बुरे चरचे जगाते और फ़ितने उठाते हैं उन को डर जाना चाहिये कि पारह 18 **सू-रतुन्नूर** आयत नम्बर 19 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۙ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है दुन्या और आख़िरत में ।

बा'ज़ लोग बहुत ही झगड़ालू त़बीअ़त के मालिक होते हैं, ख़्वाह म ख़्वाह **ग़ीबतें** करते, चुग़्लियां खाते, तन्क़ीदें करते, बाल की खाल उतारते, बात बात पर फ़सादात बरपा करते और मुसल्मानों के लिये **ईज़ा** का बाइ़स बनते रहते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि पारह 30 **सू-रतुल बुरूज** की दसवीं आयते मुबा-रका में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है :

اِنَّ الَّذِیْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ یَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ لَهُمْ عَذَابُ الْحَرِیْقِ ﴿۱۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जिन्हों ने ईज़ा दी मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों को फिर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिये आग का अ़ज़ाब ।

फ़ितने जगाने वालों पर ला'नत

ह़दीसे पाक में है : ''फ़ितना सोया हुवा होता है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत जो इस को बेदार करे ।''

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطی ص ۳۷۰ حدیث ۵۹۷۵)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (ترغیب)

अगर मीज़ां पे पेशी हो गई तो हाए बरबादी!! गुनाहों के सिवा क्या मेरे नामे में भला निकले
करम से उस घड़ी सरकार पर्दा आप रख लेना सरे महशर मेरे ऐबों का जिस दम तज़्किरा निकले

(वसाइले बख़्शिश, स. 261)

अपने तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारान की इत़ाअ़त जारी रखते हुए म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों में पाबन्दी से सफ़र करते रहने के साथ साथ ह़स्बे ह़ाल म-दनी कामों की ख़ूब धूमें मचाते रहिये, **अल्लाह** तआ़ला हम सब का ह़ामी व नासिर हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसल्मान, मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

18 रबीउ़ल अव्वल 1434 सि.हि.
31-01-2013

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

तहदार मेहंदी लगाने से वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं होता

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के ग़ैर मत़्बूआ़ फ़तवे की तल्ख़ीस)

जिर्म दार या'नी तह वाली मेहंदी, नेल पॉलिश और स्टीकर्ज़ वाले मेकअप के लगे होने की ह़ालत में वुज़ू और ग़ुस्ल नहीं होता, इस लिये कि मज़्कूरा तीनों चीज़ें पानी के जिल्द तक पहुंचने से मानेअ़ (या'नी रुकावट) हैं, और इन चीज़ों का लगाना किसी शर-ई ज़रूरत या ह़ाजत के लिये भी नहीं। क़ाइ़दा येह है कि जो चीज़ें पानी को जिस्म तक पहुंचने से मानेअ़ (या'नी रुकावट) हों उन के जिस्म पर चिपके होने की ह़ालत में वुज़ू और ग़ुस्ल नहीं होता, क्यूं कि वुज़ू में सर के इ़लावा बाक़ी तीनों आ'ज़ाए वुज़ू पर और ग़ुस्ल में पूरे जिस्म के हर हर बाल और हर हर रूंगटे पर पानी बह जाना फ़र्ज़ है।

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने हुमाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام फ़रमाते हैं : अगर इस (या'नी वुज़ू करने वाले) के नाख़ुन के ऊपर ख़ुश्क मिट्टी या इस की मिस्ल कोई और चीज़ चिपक गई या धोने वाली जगह पर सूई की नोक के बराबर बाक़ी रह गई तो जाइज़ नहीं है या'नी वुज़ू नहीं होगा। (فتح القدیر ج ۱ ص ۱۳ کوئٹہ) मुह़ीत़ में ज़िक्र किया गया है कि अगर किसी आदमी के जिस्म पर मछली की जिल्द या चबाई हुई रोटी लगी है और ख़ुश्क हो चुकी है इस ह़ालत में इस ने ग़ुस्ल या वुज़ू किया और पानी उस के नीचे जिस्म तक नहीं पहुंचा तो ग़ुस्ल और वुज़ू नहीं होगा, और इसी त़रह़ नाक की ख़ुश्क रींठ का हुक्म है, इस लिये कि ग़ुस्ल में पूरे बदन को धोना वाजिब है और येह अश्या अपनी सख़्ती की वजह से पानी के जिस्म तक पहुंचने से मानेअ़ (या'नी रुकावट) हैं (فتاوی عالمگیری ج ۱ ص ۵، غنیہ ص ۴۹، سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور) फ़तावा आ़लमगीरी में है : अगर वुज़ू वाली किसी जगह पर सूई की नोक के बराबर कोई चीज़ बाक़ी हो या नाख़ुन के ऊपर ख़ुश्क या तर मिट्टी चिपक जाए तो जाइज़ नहीं या'नी वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं होगा। इसी में है : ख़िज़ाब जब जिर्म दार हो और

ख़ुश्क हो जाए तो वुज़ू और ग़ुस्ल की तमामिय्यत से मानेअ़ (या'नी मुकम्मल होने में रुकावट) है। या'नी इस की वजह से वुज़ू और ग़ुस्ल ताम (या'नी मुकम्मल) नहीं होगा । (عالمگیری ج۱ص۴ دارالفکر بیروت) इसी में एक और मक़ाम पर है : "अगर औ़रत ने अपने सर पर कोई ख़ुश्बू इस त़रह़ लगाई कि उस की वजह से बालों की जड़ों तक पानी नहीं पहुंचता तो उस पर उस ख़ुश्बू को ज़ाइल करना वाजिब है ताकि पानी बालों की जड़ों तक पहुंच जाए।" (ایضاً ص۱۳) **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मछली का सिन्ना आ'ज़ाए वुज़ू पर चिपका रह गया वुज़ू न होगा कि पानी उस के नीचे न बहेगा ।" (बहारे शरीअ़त, जिल्द : 1, ह़िस्सा : 2, स. 292, मक-त-बतुल मदीना कराची) और जहां तक इस बात का तअ़ल्लुक़ है कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने मेहंदी के जिर्म (या'नी तह) के बा वुजूद वुज़ू हो जाने की तस्रीह़ की है तो इस का जवाब येह है कि उन ह़ज़रात का येह हुक्म उस मा'मूली से जिर्म (या'नी तह) के बारे में है जो मेहंदी लगाने के बा'द अच्छी त़रह़ धोने के बा'द भी लगा रह जाता है, जिस की देखभाल में ह़रज है जैसे आटा गूंधने के बा'द मा'मूली सा आटा नाख़ुन वग़ैरा पर लगा रह जाता है येह नहीं कि पूरे हाथ पाउं पर प्लास्टिक की त़रह़ मेहंदी का जिर्म (या'नी जिस्म, तह) चढ़ा लें, बाज़ूओं पर भी ऐसी ही मेहंदी का अच्छा ख़ासा ह़िस्सा जमा लें, पूरा चेहरा स्टीकर्ज़ वाले मेकअप से छुपा लें और फिर भी वुज़ू व ग़ुस्ल होता रहे ! ऐसी इजाज़त हरगिज़ हरगिज़ किसी फ़क़ीह ने नहीं दी। बहर ह़ाल मज़्कूरा सूरत में वुज़ू नहीं होता और जब वुज़ू न हुवा तो नमाज़ भी न हुई, लिहाज़ा माज़ी में अगर किसी ने इस त़रह़ पन्जगाना नमाज़ें पढ़ी हों तो उस के लिये ज़रूरी है कि याद कर के और अगर याद न हो तो ज़न्ने ग़ालिब के मुत़ाबिक़ ह़िसाब लगा कर फ़र्ज़ों और वित्र की क़ज़ा पढ़े ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (کنزالعمال)

फ़ेहरिस

100 ह़ाजतें पूरी होंगी	1	इख़्लास की 5 ता'रीफ़ात	24
सगे मदीना का एह़सास	4	इख़्लास के मा'ना "रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल करना"	25
..... तो मैं दा'वते इस्लामी वालों से दूर हो गया	5	इख़्लास येह है कि "अपने अ़मल की ता'रीफ़" ना पसन्द हो	25
अल्लाह तआ़ला जन्नत के दो जोड़े पहनाएगा	6	इख़्लास के मु-तअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन के 5 फ़रामीन	26
ता'ज़ियत किसे कहते हैं	6	तीन अ़त़ाएं तीन महरूमियां	27
रूठा हुवा मन गया	6	30 बरस की नमाज़ें क़ज़ा कीं	27
दा'वते इस्लामी में भारी अक्सरिय्यत ग़रीबों की है	7	ह़िकायत : न सवाब मिला न अ़ज़ाब	28
बेशक मालदारों का भी दीन में ह़िस्सा है	8	मुबल्लिग़ पर शैत़ान का वार	28
ग़ुरबत के फ़ज़ाइल	10	आ़लिम की दो रक्अ़तें जाहिल की साल भर की इ़बादत से अफ़ज़ल	29
"इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त" बराए ईसाले सवाब	10	ह़िकायत : 60 साल का'बे का ख़ादिम	30
सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ की जानिब से की गई जवाबी मेइल	12	बद गुमानी भरी इ़बारत की निशान देही	30
तह़रीर बा'ज़ अवक़्त अपने मुह़र्रिर के मिज़ाज की अ़क्क़ास होती है	13	बद गुमानी की तबाह कारियां	31
ख़ुद को "अहम शख़्सिय्यत" समझना भूल है	14	बद गुमानी ह़राम है	32
दीन की ख़िदमत के सबब इ़ज़्ज़त की त़लब	15	बद गुमानी की ता'रीफ़	32
रियाकारी का दर्दनाक अ़ज़ाब	16	बद गुमानी क्यूं ह़राम है	33
ख़ुद पसन्दी की तबाह कारियां	17	बद गुमानी के मुख़्तसरन 7 इ़लाज	34
ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़	17	मुसल्मान की ख़ूबियों पर नज़र रखिये	34
ख़ुद पसन्दी की अहम वज़ाह़त	17	बद गुमानी हो तो तवज्जोह हटा दीजिये	34
मैं तो ख़ूब दीन की ख़िदमत करता हूं !	18	ख़ुद नेक बनिये ताकि दूसरे भी नेक नज़र आएं	35
मैं ने येह किया ! मैं ने वोह किया !	19	बुरी सोह़बत बुरे गुमान पैदा करती है	36
ख़ुद पसन्दी की मज़म्मत पर बुज़ुर्गाने दीन के 5 फ़रामीन	20	किसी से बद गुमानी हो तो अ़ज़ाबे इलाही से ख़ुद को डराइये	36
ख़ुद पसन्दी का इ़लाज	22	किसी के बारे में बद गुमानी पैदा हो तो अपने लिये दुआ़ कीजिये	37
इख़्लास	23	जिस के लिये बद गुमानी हो उस के लिये दुआ़ए ख़ैर कीजिये	37

जो लिखने में ख़त़ा खा जाता है वोह बोलने में न जाने क्या क्या कह जाता होगा !	38	हर दा'वते इस्लामी वाला मेरा प्यारा है	44
बद गुमानी के बारे में आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा	39	म-दनी काम करने वाले मुझे ज़ियादा अ़ज़ीज़ हैं	45
नाराज़ी से बचाने वाले म-दनी फूल	39	फ़ितने फैलाने की वईदें	45
दिलजूई न करने के दो नुक़्सानात	40	फ़ितने जगाने वालों पर ला'नत	46
शख़्सिय्यात से तअ़ल्लुक़ात के मु-तअ़ल्लिक़ अहम वज़ाह़तें	40		
क्या शख़्सिय्यत का ता'ज़ियत करना आख़िरत के लिये बाइ़से सआ़दत है ?	41		
वा'दा कर के न आने वालों के बारे में ह़ुस्ने ज़न	42		
अपना क़ौल निभाना चाहिये	42		
ख़बरदार ! बे जा वज़ाह़त कहीं गुनाहों में न डाल दे	43		
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी	43		

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قراٰن مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	جمع الجوامع	دارالکتب العلمیہ بیروت
تفسیر کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	الطبقات الکبریٰ	دارالکتب العلمیہ بیروت
تفسیر بیضاوی	دارالفکر بیروت	فتح الباری	دارالکتب العلمیہ بیروت
نورالعرفان	پیر بھائی کمپنی مرکز الاولیاء لاہور	المجموع	دارالفکر بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیہ بیروت	فیض القدیر	دارالکتب العلمیہ بیروت
ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	رسالہ قشیریہ	دارالکتب العلمیہ بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت	حدیقہ ندیہ	پشاور
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	احیاء العلوم	دارصادر بیروت
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	تنبیہ المغترین	دارالمعرفۃ بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیہ بیروت	الزواجر	دارالمعرفۃ بیروت
حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیہ بیروت	فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
شعب الایمان	دارالکتب العلمیہ بیروت	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الترغیب والترہیب	دارالکتب العلمیہ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الجامع الصغیر	دارالکتب العلمیہ بیروت	اللہ والوں کی باتیں	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मकानात के बारे में अहम हिदायात

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) जब क़ज़ाए हाजत के लिये जाओ तो क़िब्ले को न मुंह करो और न पीठ। (بخاری ج ۱ ص ۱۵۵ حدیث ۳۹۴) (2) जो कोई क़ज़ाए हाजत के वक़्त क़िब्ले को मुंह और पीठ न करे तो उस के लिये एक नेकी लिखी जाती है और एक गुनाह मिटा दिया जाता है। (معجم اوسط ج ۱ ص ۳۶۱ حدیث ۱۳۲۱) अगर मकान का नक़्शा बनाते बनवाते वक़्त **आर्कीटेक्ट** और बिल्डर्ज़ वग़ैरा अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ज़ैल की चन्द बातों पर अमल करें तो बहुत सारा सवाब कमा सकते हैं : ﴾1﴿ बाथरूम बनाने में W.C. की तरकीब इस तरह हो कि बैठते वक़्त मुंह या पीठ क़िब्ले से 45 डिग्री के बाहर रहे और आसानी इस में है कि रुख़ क़िब्ले से 90 डिग्री पर हो या'नी नमाज़ के बा'द दोनों बार सलाम फैरने में जिस तरफ़ मुंह करते हैं उन दोनों सम्तों में से किसी एक जानिब W.C. का रुख़ रखिये। फ़िक़्हे ह-नफ़ी की मशहूर किताब "दुर्रे मुख़्तार" में है : क़ज़ाए हाजत और पेशाब करते वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ करना ना जाइज़ व गुनाह है। (دُرِّ مختار ج ۱ ص ۶۰۸) ﴾2﴿ फ़व्वारा (SHOWER) लगाने में भी येही एहतियात रखी जाए ताकि बरहना नहाने वाला क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ करने से बचा रहे। आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ब हालते बरहनगी (या'नी नंगे होने की हालत में) क़िब्ले को मुंह या पीठ करना मकरूह व ख़िलाफ़े अदब है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 349) ﴾3﴿ बेडरूम में पलंग की तरकीब इस तरह रखी जाए कि सोने में पाउं क़िब्ले की तरफ़ न हों, कम अज़ कम 45 डिग्री के बाहर रहें। "फ़तावा शामी" में है : "जान बूझ कर क़िब्ले की तरफ़ पाउं फैलाना मकरूहे तन्ज़ीही है।" (مُلَخَّص از فتاوٰی شامی ج ۱ ص ۶۰۸-۶۱۰)
﴾4﴿ अगर W.C. या शावर, या चारपाई पलंग वग़ैरा का रुख़ ग़लत हो कि बरहना होने की हालत में मुंह या पीठ क़िब्ला रू होते हों या सोते हुए पाउं, तो इस्तिन्जा करने वाले या नहाने वाले या सोने वाले को बहर सूरत इस का ख़याल रखना होगा कि वोह बरहना हो कर क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ न करे, यूंही पाउं न फैलाए।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net